



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section I

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 226]
No. 226]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, अक्तूबर 4, 2012/आश्विन 12, 1934
NEW DELHI, THURSDAY, OCTOBER 4, 2012/ASVINA 12, 1934

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 4 अक्तूबर, 2012

अन्तिम निष्कर्ष

विषय: चीन जनगण के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित कोलिन क्लोराइड के आयातों संबंध में पाटनरोधी जाँच।

सं. 14/19/2011-डीजीएडी.—समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और उसके अन्तर्गत समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क की पहचान, आकलन और संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली (जिन्हें एतदपश्चात् पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) के संबंध में;

क. मामले की पृष्ठभूमि

1. इस मामले की पृष्ठभूमि निम्नवत् है:

क. यतः, मै0 जुबिलैण्ट लाइफ साइन्सेस लिमिटेड, नौएडा (जिसे एतदपश्चात् याचिकाकर्ता और/या घरेलू उद्योग कहा गया है) ने चीन जन गण (जिसे एतदपश्चात् सम्बद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित कोलिन क्लोराइड (जिसे एतदपश्चात् सम्बद्ध वस्तु कहा गया है) के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जाँच शुरू करने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष एक आवेदन पत्र दायर

किया है और सम्बद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का अनुरोध किया है।

- ख. यतः, प्राधिकारी ने, याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग की ओर से आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयात के संबंध में तथाकथित पाटन की मौजूदगी, उसकी मात्रा और उसके प्रभाव का आकलन करने और सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और उसके अधीन बने सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 के अनुसार पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करने के लिए पाटनरोधी जांच प्रारंभ करने हेतु भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित 25 अक्टूबर, 2011 को एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया।
- ख. प्रक्रिया
2. निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है:
- क. निर्दिष्ट प्राधिकारी को, चीन जन गण के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित कोलिन क्लोराइड के पाटन का आरोप लगाते हुए उपर्युक्त नियमों के अन्तर्गत मै0 जुबिलैण्ट लाइफ साइन्सेस लिमिटेड नौएडा से उत्पाद के लिए घरेलू उद्योग के रूप में एक आवेदन प्राप्त हुआ और मै9 बाला जी एमाइन्स लिमिटेड ने उसका समर्थन किया है।
- ख. प्राधिकारी ने जाँच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराते हुए याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर सम्बद्ध देश से सम्बद्ध वस्तु के आयातों के खिलाफ जाँच शुरू करने का निश्चय किया।
- ग. प्राधिकारी ने जाँच शुरुआत की प्रक्रिया शुरू करने से पहले, पाटनरोधी नियमावली के उपनियम 5(5) के अनुसार, इस याचिका की प्राप्ति के बारे में सम्बद्ध देश के भारत स्थित राजदूतावास को अधिसूचित किया।
- घ. प्राधिकारी ने, सम्बद्ध वस्तु के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जाँच शुरू करने के लिए भारत के राजपत्र, असाधारण में दिनांक 25 अक्टूबर, 2011 को प्रकाशित एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया।

- ड. प्राधिकारी ने इस सार्वजनिक सूचना की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों (जिनका विवरण आवेदक द्वारा उपलब्ध कराया गया था) तथा उद्योग एसोसिएशनों को भेजी गई और उन्हें पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार अपने विचार लिखित में प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया।
- च. प्राधिकारी ने इस सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भारत में संबद्ध वस्तु के सभी ज्ञात आयातकों को अग्रेषित की और उन्हें इस पत्र की तारीख से चालीस दिनों के अंदर अपने विचार लिखित रूप में प्रस्तुत करने का सुझाव दिया।
- छ. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के आवेदन के अगोपनीय पाठ की एक प्रति पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार सभी ज्ञात निर्यातकों और संबद्ध देश के भारत स्थित राजदूतावास को उपलब्ध कराई। घरेलू उद्योग के आवेदन की एक प्रति अन्य हितबद्ध पक्षकारों को, जहां इसके लिए अनुरोध किया गया, भी प्रदान कराई गई।
- ज. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को संगत सूचना उपलब्ध कराने के लिए पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार प्रश्नावलियाँ भेजी:

क्रम सं.	निर्यातक का नाम
1.	मै0 एनबी ग्रुप कं0, लि0 (पूर्ववर्ती शानडांग एनबी ग्रुप कम्पनी), 4-16 एफ चीन मर्चेन्ट्स प्लाजा, 70 डॉंग गुयान झोंग स्ट्रीट, जियान 710048, चीन
2.	नान्तांग क्विहाई कैमिकल्स कम्पनी लिमि0, 21, यांगजिंग इंटरनेशनल नैनटांग, जियांग्सु, चीन
3.	बी-लांग (नार्थ) कारपोरेशन, झोन्गजी यूयी फार्म, हुआंगहुआ, काउन्टी, हीबेई प्रान्त, चीन
4.	जौपिंग जूजिया कोलिन इण्डस्ट्रियल कम्पनी लिमि0, हाण्डियान इण्डस्ट्रियल जोन, जौपिंग काउन्टी, शानडांग, चीन
5.	शानडांग बीलान्ग कोलिन इण्डस्ट्रियल कारपोरेशन लिमि0, हाण्डियान इण्डस्ट्रियल जोन, जौपिंग, बिन्झोऊ, शानडांग चीन

6.	हीबेई ग्लोबल फाडर एडिटिव कम्पनी लिमि0 झांगझुंगजी इण्डस्ट्री पार्क, कैन्गझोऊ, हीबेई, चीन
7.	सिनोकेम जियान्गसू कम्पनी लिमि0, फ्लोर्स 21 एवं 22, जिन चेंग टावर, सं0 216, मिडिल लांगपैन रोड, नान्जिंग 210002, चीन

झ. इस जॉच शुरुआत अधिसूचना के प्रत्युत्तर में चीन जन गण से किसी निर्यातक/उत्पादक ने प्राधिकारी को प्रत्युत्तर नहीं दिया।

य. संबद्ध वस्तु के भारत में निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराने की मांग करते हुए पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अंतर्गत आयातक प्रश्नावली भेजी:

1.	प्रोविमी एनिमल न्यूट्रीशन (आई) प्रा0 लिमि0, आईएस-40, केएचबी इण्डस्ट्रियल एरिया, येलाहान्का न्यू टाउन, बंगलौर - 560106, कर्नाटक, भारत
2.	चोखानी फार्मा वेट, तृतीय तल, 16/3 नादिरशाह सुखिया स्ट्रीट, बानू मैन्सन, फोर्ट, मुम्बई
3.	कवि एजेन्सीज, 25, सिद्धि कालोनी, पहला क्रास, जयचमराजा रोड, बंगलौर -560002
4.	शान्ति पाउल्ट्री फार्म्स प्रा0 लिमि0 6/15 मेन रोड, पप्पमपत्ती, ओन्डीपुडुर, कोयम्बटूर -641016, तमिलनाडु
5.	वेटलाइन, 1-ख, विकास रेखा काम्प्लेक्स, खतीवाला टैंक, निकट टावर स्क्वेयर, इन्दौर - 452001, मध्य प्रदेश
6.	वर्ष मल्टीब्लेक, 8,40 स्ट्रीट रोड, प्रथम स्टेज, 2 फेज, मन्जूनाथ नगर, बेंगलूरु, कर्नाटक 560010

ट. जॉच शुरुआत अधिसूचना के बारे में निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं ने प्रत्युत्तर दिया:

क्रम सं०	प्रत्युत्तरदाता का नाम	स्थिति
1.	प्रोविमी एनिमल न्यूट्रीशन (इण्डिया) प्रा० लिमि०	आयातक
2.	वर्ष मल्टीटेक	आयातक
3.	सुगुना पाउल्ट्री फार्म लिमिटेड	

- ठ. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय पाठ को हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए सार्वजनिक फाइल में रखा गया। जाँच प्रक्रिया के दौरान निर्यातकों, आयातकों/प्रयोक्ता एसोसिएशनों तथा घरेलू उद्योग ने इस जाँच से संबंधित सूचना प्रस्तुत की तथा सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत प्रस्तुतिकरणों का वर्तमान प्रकटन विवरण में ध्यान रखा गया है।
- ड. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदान कराई गई जानकारी की गोपनीयता के दावों की पर्याप्तता के संबंध में जाँच की गई। प्राधिकारी ने संतुष्ट होने पर, जहाँ कहीं वांछित हुआ वहाँ, गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया और ऐसी जानकारी गोपनीय मानी गई तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को इसका खुलासा नहीं किया गया। गोपनीय आधार पर जानकारी प्रदान करने वाले पक्षकारों को निदेश दिया गया कि वे गोपनीय आधार पर दर्ज की गई जानकारी का यथासंभव पर्याप्त अगोपनीय पाठ भी उपलब्ध कराएं और उसे नियमों के अनुसार प्राधिकारी द्वारा अनुरक्षित सार्वजनिक फाइल में रखा गया।
- ढ. घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत जानकारी पर आधारित भारत में सामान्यतः स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर संबद्ध वस्तु की भारत में गैर-क्षतिकारी कीमत तथा उसका निर्माण करने एवं उसकी बिक्री की लागत का निर्धारण किया गया ताकि यह आकलन किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से न्यूनतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षति दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।
- ण. यह जाँच 1 अप्रैल, 2010 से 31 मार्च, 2011 जाँच की अवधि (पीओआई) के लिए की गई थी। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जाँच में 2007-08, 2008-09, 2009-10 की अवधि तथा जाँच की अवधि को शामिल किया गया।

- त. प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों के तर्क सुनने के लिए 13 अगस्त, 2012 को एक मौखिक सुनवाई आयोजित की। हितबद्ध पक्षकारों से कहा गया कि वे मौखिक सुनवाई के दौरान दिए गए मौखिक तर्क को लिखित रूप में प्रस्तुत करें। हितबद्ध पक्षकारों से लिखित प्रस्तुतिकरणों का रिजवाइण्डर देने का भी अनुरोध किया गया। लिखित में दिए गए इन सब प्रस्तुतिकरणों पर प्राधिकारी द्वारा जाँच के संगत पाई गई सीमा तक विचार किया।
- थ. निर्दिष्ट प्राधिकारी के विचाराधीन सभी आवश्यक तथ्यों सहित एक प्रकटन विवरण जो उपर्युक्त जांच में अंतिम निष्कर्ष की सिफारिश करने के लिए आधार बनेगा, 24 सितम्बर, 2012 को जारी किया गया। इस प्रकटन विवरण के संबंध में सभी हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियों जिन्हें जाँच के संगत पाया गया, इस अंतिम निष्कर्ष में जाँच की गई।
- द. *** इस अंतिम निष्कर्ष अधिसूचना में एक हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत जानकारी का प्रतिनिधित्व किया गया है और इसे प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत उस पर विचार किया।
- ध. जाँच की अवधि के लिए अमरीकी डॉलर को रुपये में परिवर्तित करने हेतु विनिमय दर सीमा शुल्क आंकड़ों के अनुसार 46.18 रुपये मानी गई।
- ग. विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु
3. वर्तमान जाँच में विचाराधीन उत्पाद पशु फीड के लिए प्रयोग किए जाने वाला सभी रूपों और सान्द्रणों में कालिन क्लोराइड है। कालिन क्लोराइड एक चतुर्थक अमोनियम लवण है। यह रंगहीन, चिपचिपा, एवं अत्यधिक अल्कालाइन (क्षारीय) होता है। यह पशु आहार में संयोजक के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह उत्पाद सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के सीमा शुल्क उप-शीर्षक 2309.9010 और 2923.1000 के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल संकेतक है तथा यह मौजूदा जाँच तथा प्रस्तावित उपायों के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है।

हितबद्ध पक्षकारों के विचार

4. हितबद्ध पक्षकारों ने विचाराधीन उत्पाद, समान वस्तु और उत्पाद के आयातों के संबंध में निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए हैं:
- क. मै0 सुगुना पाउल्ट्री फार्मा लिमिटेड ने दावा किया है कि घरेलू उद्योग द्वारा आवेदन में कुछ प्रविष्टियाँ "संदिग्ध प्रविष्टियाँ" के रूप में दर्शायी गई हैं। आयात आंकड़ों पर पहुंचने के लिए अपनाई गई पद्धति अस्पष्ट है। कम्पनी ने यह भी उल्लेख किया है कि नीदरलैंड्स से सम्बद्ध वस्तु के यानान्तरण का कोई प्रमाण नहीं है, जैसाकि घरेलू उद्योग ने प्रदान कराया है। कम्पनी ने पुनः उल्लेख किया कि यह नहीं बताया गया है कि उत्पादन, बिक्री मात्रा और निवल बिक्री प्राप्ति, उत्पाद के संकेन्द्रण के किस स्तर के हैं।
- ख. मै0 प्राविमी ने जॉच शुरुआत नोटिस का प्रतयुत्तर दिया और व्यक्तिगत सुनवाई का अनुरोध किया। तथापि, कम्पनी ने प्राधिकारी द्वारा आयोजित मौखिक सुनवाई में भाग नहीं लिया।
- ग. मैसर्स वर्ष मल्टीटेक ने निवेदन किया कि कोलिन क्लोराइड के आयातों पर, भारतीय कुक्कुट फार्मों और उद्योग के हित में, पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया जाना चाहिए। कम्पनी ने पुनः दावा किया कि याचिकाकर्ता की भारत में एकाधिकार जैसी स्थिति है। वर्षा मल्टीटेक ने दावा किया कि याचिकाकर्ता लगभग 1500 टन का निर्यात करता है और 8500 टन घरेलू बाजार में बिक्री करने के लिए छोड़ता है। कम्पनी ने यह भी उल्लेख किया है कि इस उत्पाद की मांग में देश में आपूर्ति की तुलना में गिरावट आई है। यदि पाटनरोधी शुल्क द्वारा आयातों की मनाजी कर दी गई या आयातों को प्रतिबंधित कर दिया गया तो भारतीय पाउल्ट्री संकट में पड़ जाएगी और देश में इसका भीषण अभाव हो जाएगा।
- घ. याचिकाकर्ता ने जॉच का दायरा बढ़ाने और कोलिन क्लोराइड (खाद्य एवं फार्मा सहित सभी ग्रेड एवं अनुप्रयोग) को पाटनरोधी शुल्क के कवर के अन्तर्गत लाने का प्रयास किया है।

- ड. याचिकाकर्ता ने अपनी याचिका में इस उत्पाद का दायरा पशु आहार/ग्रेड अनुप्रयोग तक सीमित कर दिया है और इसलिए वह इस उत्पाद का दायरा बढ़ाने की मांग नहीं कर सकता है, खासकर तब जबकि अन्य ग्रेड के प्रयोक्ता इस जाँच के पक्षकार नहीं हैं।
- च. कोलिन क्लोराइड के प्रत्येक ग्रेड और अनुप्रयोगों का भिन्न विनिर्देशन होता है और इसलिए याचिकाकर्ता का यह दावा कि कोलिन क्लोराइड के 100% संकेन्द्रण के उत्पादन का प्रयोग खाद्य एवं फार्मा अनुप्रयोगों में भी किया जा सकता है, गलत है।
- छ. एमओएफ ने स्पष्ट किया है कि पशु आहार ग्रेड में प्रयोग किया जाने वाला कोलिन क्लोराइड केवल अध्याय 23 के अन्तर्गत वर्गीकृत है और इसलिए इस उत्पाद का एचएस कोड केवल इस अध्याय तक प्रतिबंधित रहना चाहिए।

घरेलू उद्योग के विचार

5. घरेलू उद्योग के विचार निम्नलिखित हैं:-

- क) कोलिन क्लोराइड एक चतुर्थांश अमोनियम लवण होता है, जो रंगहीन, चिपचिपा और अत्यधिक क्षारीय होता है। इसे पशु आहार में संयोजक के रूप में प्रयोग किया जाता है। शुद्धिकृत कोलिन क्लोराइड को एक वाहक पर जमा किया जाता है और तब इसे सुखाया जाता है। सामान्यतः, प्रयोग किए जाने वाले वाहक हैं; सिलिका, कार्नाकब पाउडर या कृषि अपशिष्ट सामग्री से प्राप्त इसके जैसा ही अबशोषक पाउडर होता है। इस वाहक का प्रयोग केवल उत्पाद कोलिन क्लोराइड को ढोने के लिए किया जाता है। इस उत्पाद का वाणिज्यिक नामकरण प्रयोग किए गए वाहक और यौगिक में कोलिन क्लोराइड के प्रतिशत पर निर्भर करता है।
- ख) कोलिन क्लोराइड का सामान्यतः प्रयोग कुक्कुट भोजनके अनुपूरक के रूप में किया जाता है।
- ग) वर्तमान याचिका और प्रस्तावित उपाय पशु आहार अनुप्रयोगों के लिए कोलिन क्लोराइड के सभी रूपों और प्रकारों से संबंधित है। केवल फार्मा और खाद्य में प्रयुक्त कोलिन क्लोराइड को विचाराधीन जाँच के दायरे से, उसके लिए पर्याप्त

उचित कारण देते हुए, हटा दिया जाना चाहिए। तथापि, पशु अनुप्रयोगों के लिए कोलिन क्लोराइड विचाराधीन उपयोग के अन्तर्गत आता है।

- क. याचिकाकर्ता को कुछ ऐसे लेन देन मिले जिनके अन्तर्गत ऐसा प्रतीत होता था कि यह दोहरी प्रविष्टि हो सकती है और अतः इसे "संदेहजनक" के रूप में चिन्हित किया गया। संरक्षी आकलन के रूप में याचिकाकर्ता ने आयातों की कुल मात्रा का निर्धारण करने के लिए इन आयात प्रविष्टियों को नजरअन्दाज कर दिया है।
- ख. रिपोर्ट किया गया उत्पादन 60% आधार पर है। चूँकि भोज्य ग्रेड की आपूर्ति 60% आधार पर की जाती है और चूँकि उत्पादन एवं बिक्री की अधिकता फीड ग्रेड की ही रहती है, इसलिए याचिकाकर्ता ने सारी जानकारी 60 आधार पर ही दी है। जहाँ कहीं 75% के बारे में जानकारी का संबंध होता है, वहाँ उसे भी, आंकड़ों में एकरूपता बनाए रखने के लिए उसे 60% में बदल दिया गया है।
- ग. नियम 6 के अन्तर्गत प्राधिकारी सह यह अपेक्षा की जाती है कि वे सभी हितबद्ध पक्षकारों को, जाँच के दौरान और परन्तु इस मामले में प्रारम्भिक निष्कर्ष निकालने से आगे बढ़ने से पहले नहीं, यह सूचना मौखिक रूप से प्रदान करने का अवसर देंगे। प्राधिकारी द्वारा सुनवाई प्रक्रिया सामान्यतः प्रारम्भिक निष्कर्षों के बाद और जाँच का समापन करने से पहले की जाती है।
- घ. ट्रांसशिपमेंट - इस उत्पाद के प्रोविमी एनिमल न्यूट्रीशन इण्डिया प्रा० लिमि० द्वारा भारी आयात किए गए हैं। चूँकि कम्पनी ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रत्युत्तर दिया है इसलिए इस कम्पनी द्वारा प्रदान कराई गई सूचना इस संबंध में सही तथ्य स्थापित करेगी।
- ङ. वर्षा मल्टीटेक एक आयातक, उपभोक्ता और कोलिन क्लोराइड का व्यापारी है।
- च. चीन से कोलिन क्लोराइड के आयात पहले पाटनरोधी शुल्क के अध्याधीन था। पाटनरोधी शुल्क व्यपगत होने के पश्चात् आयातों का पाटन फिर से शुरू हो गया और अब यह आयात भारी मात्रा में बढ़ रहे हैं।

प्राधिकारी द्वारा जॉच

6. वर्तमान जॉच का विचाराधीन उत्पाद पशु आहार में प्रयोग होने वाला सभी रूपों एवं सान्द्रण का कोलिन क्लोराइड है। याचिकाकर्ता ने तर्क दिया है कि विचाराधीन उत्पाद के दायरे में इसके सभी रूपों और सान्द्रणों पर विचार किया जाना चाहिए। कोलिन क्लोराइड एक घटुर्थाश अमोनियम लवण है। यह रंगहीन, चिपचिपा और अत्यधिक क्षारीय होता है। इसका प्रयोग पशु भोज्य में संयोजक के रूप में किया जाता है। शुद्धिकृत कोलिन क्लोराइड को एक बाहक पर जमा करके इसे सुखाया जाता है। इन वाकों में अधिकांशतः सिलिका, कार्नकाब पाडर या कृषि अपशिष्ट वस्तुओं से प्राप्त ससमान अवशेषक पाउडर होते हैं। वाहक का प्रयोग केवल उत्पाद-कोलिन क्लोराइड को ले जाने के लिए किया जाता है। इस उत्पाद का वाणिज्यिक नामकरण प्रयोग किए गए वाहक और यौगिक में कोलिन क्लोराइड के प्रतिशत के रूप में किया जाता है। उदाहरणार्थ, यदि उत्पाद में न्यूनतम 70% कोलिन क्लोराइड है और इसका बाहक कार्न काब है तो इसे कोलिन क्लोराइड 70% कार्न काब कहा जाता है। यदि वाहक सिलिका है तो उत्पाद में कोलिन क्लोराइड का न्यूनतम प्रतिशत 50% है तो इसे कोलिन क्लोराइड 50% सिलिका कहा जाता है। याचिकाकर्ता ने स्पष्ट किया है कि वर्तमान जॉच कोलिन क्लोराइड के सभी रूपों और प्रकार के लिए है और तुलना में सुविधा के लिए सभी मात्रा को कोलिन क्लोराइड 60% में परिवर्तित कर दिया गया है क्योंकि भारतीय पत्तन पर आने वाले अधिकांश आयात कोलिन क्लोराइड 60% कार्न काब के होते हैं। कोलिन क्लोराइड का प्रयोग मूलतः कुक्कुट भोज्य अनुपूरक के रूप में होता है। याचिकाकर्ता ने तर्क दिया है कि भारत में जानकारी के अभाव में कोलिन क्लोराइड का प्रयोग सीमित है और याचिकाकर्ता ने बाह्य में इस उत्पाद की जागरूकता संवर्धन के लिए समर्पित प्रयास किए हैं जिसके कारण देश में इस उत्पाद की मांग में भारी वृद्धि हुई है।
7. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोलिन क्लोराइड के तीन प्रमुख अनुप्रयोग हैं - पशु भोज्य अनुप्रयोग, जिसमें शामिल हैं अक्वाफीड, कुक्कुट फीड, डेयरी फीड या कोई अन्य पशु फीड; फार्मा अनुप्रयोग एवं खाद्य (मानव) अनुप्रयोग। इसके अतिरिक्त, इसे विभिन्न रूपों एवं प्रकारों में उत्पादित किया जा सकता है। याचिकाकर्ता ने निम्नलिखित प्रकार/रूपों के अभिलक्षिक उत्पाद का अभिज्ञान किया है/

- क) कार्ब काब वाहक परकोलिन क्लोराइड
- ख) सिलिका वाहक पर कोलिन क्लोराइड
- ग) जल में कोलिन क्लोराइड (जलीय विलयन)

8. यह उत्पाद तरल रूप में या शुष्क पाउडर रूप में हो सकता है। इस उत्पाद की आपूर्ति विभिन्न सान्द्रणों में की जाती है जिसका विशिष्ट उत्पाद किस्म/रूप में प्रतिशत अलग-अलग हो सकता है। तथापि, अधिकांश आयात कोलिन क्लोराइड 60% कार्ब काब के होते हैं। याचिकाकर्ता ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग और चीन के उत्पादक कोलिन क्लोराइड का क्रिस्टल फार्म में भी करते हैं जिसे बाद में तरल रूप में एवं तदुपरान्त फीड अनुप्रयोग में बदल सकते हैं। याचिकाकर्ता ने तर्क दिया कि कोलिन क्लोराइड के विभिन्न रूप, कोलिन क्लोराइड के प्रतिशत अन्तर, वाहक में अन्तर या भौतिक रूप में अन्तर युक्त विभिन्न रूपों में समान उत्पाद हैं। याचिकाकर्ता द्वारा दी गई सूचना की जाँच से यह स्पष्ट होता है कि रिपोर्ट किया गया सभी उत्पाद 60% में रूपान्तरित कर दिया गया है। फीड ग्रेड की आपूर्ति भी 60% में ही की जाती है।
9. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु तथा सम्बद्ध देश से निर्यातित सम्बद्ध वस्तु में कोई भारी ज्ञात अन्तर नहीं है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु तथा सम्बद्ध देश से आयातित सम्बद्ध वस्तु सभी गुण-धर्मों जैसे भौतिक या रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया, प्रौद्योगिकी, कार्य एवं प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशन, वितरण एवं विपणन तथा वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण में समान हैं। दोनों ही उत्पाद तकनीकी रूप से और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ता इन दोनों का अन्तर्बदल कर प्रयोग कर सकते हैं।
10. सम्बद्ध वस्तु सीमा शुल्क टैरिफ के टैरिफ कोड '2309.9010' और '2923.1000' के अन्तर्गत आती है। तथापि, सम्बद्ध वस्तु के अन्य शीर्षकों जैसे 23099020 और 23099090 के अन्तर्गत भी आयात होते रहे हैं। सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतक है और यह किसी भी रूप में वर्तमान जाँच और प्रस्तावित उपायों पर बाध्यकारी नहीं है। यह नोट किया जाता है कि इन दोनों में से कोई भी सीमा शुल्क वर्गीकरण विचाराधीन उत्पाद के लिए समर्पित नहीं है। 2309.9010 के अन्तर्गत वर्गीकरण केवल "पशु यौगिक फीड" के लिए है। कोलिन क्लोराइड पशु यौगिक फीड के प्रकारों में से एक है। यह नोट किया जाता है कि एक हितबद्ध पक्षकार ने विचाराधीन उत्पाद की आयातों की मात्रा के

संबंध में दिए गए अपने तर्क के समर्थन में डीजीसीआईएण्डएस द्वारा प्रकाशित आंकड़ों का सहारा लिया है। तथापि, यह स्पष्ट किया जाता है कि, सभी तरह के पशु यौगिक फीड विचाराधीन उत्पाद के दायरे के अन्तर्गत नहीं आते हैं और इसलिए सभी प्रकार के पशुयौगिक फीड के लिए डीजीसीआईएण्डएस द्वारा प्रकाशित जानकारी वर्तमान प्रयोजन के लिए संगत नहीं है। इस उत्पाद के सटीक सीमा शुल्क वर्गीकरण और वित्त मंत्रालय द्वारा जारी परिपत्र के संबंध में यह नोट किया जाता है कि वर्तमान प्रयोजन के लिए उत्पाद वर्णन डिस्पोजिव है। सीमा शुल्क वर्गीकरण वर्तमान जाँच या प्रस्तावित उपायों के दायरे पर बाध्यकारी नहीं है। तथापि यह स्पष्ट किया जाता है कि सीमा शुल्क वर्गीकरण के अन्तर्गत आने वाले विचाराधीन उत्पाद के अतिरिक्त किसी अन्य उत्पाद पर वर्तमान निर्धारण के लिए विचार नहीं किया गया है।

11. प्रोविमी एनिमल न्यूट्रीशन इण्डिया प्रा० लिमि० ने आयातक प्रश्नावली का प्रत्युत्तर दिया है और समर्थनकारी साक्ष्य प्रस्तुत किया है। कम्पनी द्वारा दी गई जानकारी की प्राधिकारी ने जाँच की। यह नोट किया गया कि कम्पनी ने सम्बद्ध वस्तु का भारी मात्रा में आयात किया है जिसका बीजक प्रोविमी बी वी, नीदरलैण्ड्स द्वारा तैयार किया गया है। इन वस्तुओं का उद्गम का देश चीन है। अतः यह प्रतीत होता है कि आयात आंकड़ों में "नीदरलैण्ड्स" के रूप, रिपोर्ट किए गए आयात सौदे जिन पर याचिकाकर्ता ने भरोसा किया है, वे वस्तुतः चीन मूल के हैं। अब प्राधिकारी को डीजीसीआईएण्डएस से जानकारी प्राप्त हो गई है, उसकी जाँच की गई और वर्तमान निर्धारण के लिए उस पर भरोसा किया गया।
12. प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के दायरे के संबंध में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरणों की भी जाँच की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारतीय उद्योग द्वारा स्थापित सम्बद्ध वस्तु और सम्बद्ध देश से निर्यातित सम्बद्ध वस्तु के बीच कोई ज्ञात अन्तर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु तथा सम्बद्ध देश से आयातित सम्बद्ध वस्तु दोनों गुण-धर्मों के रूप में, जैसे भौतिक एवं रासायनिक गुण-धर्म, विनिर्माण प्रक्रिया और तकनीक, कार्य एवं प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशन, कीमत निर्धारण, वितरण एवं विपणन तथा वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण समान हैं। दोनों वस्तुएं तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ता इन दोनों का अन्तर्बदल कर प्रयोग कर सकते हैं। प्राधिकारी का विचार है कि सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के टैरिफ कोड 23099010, 29231000, 23099020 और 23099090 के अन्तर्गत आने वाले पशु फीड अनुप्रयोग के

लिए कोलिन क्लोराइड विचाराधीन उत्पाद के दायरे के अन्तर्गत आता है परन्तु सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतक है और यह किसी भी रूप में वर्तमान जाँच या प्रस्तावित उपायों पर बाध्यकारी नहीं है। प्राधिकारी यह भी धारित करते हैं कि पशु फीड अनुप्रयोग के लिए सभी सान्द्रणों वाला कोलिन क्लोराइड इस विचाराधीन उत्पाद के दायरे के अन्तर्गत है। प्राधिकारी धारित करते हैं कि फार्मा या खाद्य अनुप्रयोग के लिए कोलिन क्लोराइड इस विचाराधीन उत्पाद से परे है।

- 13 प्राधिकारी धारित करते हैं कि आवेदक द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु को पाटनरोधी नियमावली के अनुसार सम्बद्ध देश से आयातित विचाराधीन उत्पाद के समान घरेलू वस्तु के रूप में माना जा रहा है।

घ. घरेलू उद्योग का दायरा और आधार

घरेलू उद्योग के विचार

- 14 वर्तमान मामले में मैसर्स जुबिलैण्ट लाइफ साइन्सेस लिमिटेड आवेदक है जो नियमों के आशय के अन्तर्गत घरेलू आवेदक हैं। भारत में कोलिन क्लोराइड के कुछ अन्य उत्पादक भी हैं। तथापि, यह सभी उत्पादक तरल कोलिन क्लोराइड का उत्पादन नहीं करते हैं। वे तरल कोलिन क्लोराइड की खरीद करते हैं और फिर उसे शुष्क कोलिन क्लोराइड में परिवर्तित करते हैं। अतः, उनके इनपुट और आउटपुट दोनों ही विचाराधीन उत्पाद के अन्तर्गत आते हैं। इन उत्पादकों द्वारा किया गया प्रसंस्करण क्रियाकलाप उत्पादन के समरूप नहीं है। इसके अतिरिक्त, उनके उत्पादन को कोलिन क्लोराइड के उत्पादन में शामिल किया गया है। केवल तरल कोलिन क्लोराइड का उत्पादन करने वाले उत्पादकों को ही घरेलू उत्पादक के रूप में माना जाएगा जिससे कि दोहरा लेखाकरण न हो। उन पक्षकारों को, जो तरल कोलिन क्लोराइड की खरीद करते हैं तथा शुष्क पाउडर कोलिन क्लोराइड की बिक्री करते हैं, विचाराधीन उत्पाद के घरेलू उत्पादकों के रूप में नहीं माना जा सकता है। उनके लिए कच्चा माल और परिष्कृत माल दोनों विचाराधीन उत्पाद हैं। किसी उत्पादक को वर्तमान प्रयोजन के लिए घरेलू उत्पादक तभी माना जा सकता है जब उसका इनपुट विचाराधीन उत्पाद न हो। यदि उत्पादक का इनपुट विचाराधीन उत्पाद का एक रूप है तो उस कम्पनी को वर्तमान प्रयोजन के लिए घरेलू उत्पादक नहीं माना जा सकता है। निम्नलिखित तालिका बेसिक स्टेज और तरल स्टेज का उत्पादन करने वाले

उत्पादकों के नाम दर्शाती है:-

तरल कोलिन क्लोराइड के उत्पादक	तरल स्टेज के प्रसंस्करणकर्ता
जुबिलेंट (आवेदक)	संजय कैमिकल्स
बालाजी एमाइन्स (समर्थक)	रावत कैमिकल्स
डीए सन्स	सुप्रीम कैमिकल्स

- 15 याचिकाकर्ता का उत्पादन भारतीय उत्पादन का बड़ा हिस्सा बनता है। यह भारतीय उत्पादन का 50% से अधिक भाग है। अतः, आवेदक पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) और नियम 5(3) (क) और (ख) की अपेक्षाओं को पूरा करता है।

हितबद्ध पक्षकारों के विचार

- 16 . मै0 सुगुना द्वारा यह तर्क दिया गया कि बालाजी एमाइन्स द्वारा प्रदत्त जानकारी उन्हें उपलब्ध नहीं कराई गई।

प्राधिकारी द्वारा जाँच

- 17 . पाटनरोधी नियमावली का नियम 2(ख) घरेलू उद्योग को निम्नवत परिभाषित किया गया है:-

“(ख) ‘घरेलू उद्योग’ का आशय समग्र रूप से ऐसे घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे संबंधित किसी क्रियाकलाप में लगे हों अथवा उक्त वस्तु का उनका सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता हो परन्तु जब ये उत्पादक कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों अथवा आयातकों से संबंधित हों अथवा उसके स्वयं आयातक हों तो ऐसे मामले में ‘घरेलू उद्योग’ को शेष उत्पादकों के रूप में उल्लिखित किया जाएगा।”

- 18 यह नोट किया जाता है कि यह आवेदन घरेलू उत्पादक के रूप में मै0 जुबिलेंट लाइफ साइन्सेस लिमिटेड, नौएडा द्वारा दायर किया गया है। आवेदक का उत्पादन समान वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का भारी भाग बना है और यह कुल भारतीय उत्पादन के 50% से

अधिक है। इसके अतिरिक्त, मैसर्स बालाजी एमाइन्स लिमिटेड ने इस आवेदन का समर्थन किया है। तथापि कम्पनी ने क्षति निर्धारण से संगत जानकारी नहीं दी है और इसलिए इस कम्पनी को क्षति निर्धारण के लिए शामिल नहीं किया जा सकता है और इसलिए इस कम्पनी को क्षति जाँच के लिए शामिल नहीं किया जा सकता है। यह नोट किया जाता है कि वे पक्षकार जो तरल कोलिन क्लोराइड की खरीद करते हैं और फिर उसे शुष्क पाउडर कोलिन क्लोराइड के रूप में बेचते हैं, उन्हें विचाराधीन उत्पाद के घरेलू उत्पादक के रूप में नहीं माना जा सकता है। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने इस आधार और आवेदक के घरेलू उद्योग होने के बारे में कोई मुद्दा नहीं उठाया है। मै0 सुगुना के तर्क के संबंध में, बालाजी एमाइन्स द्वारा लिखे एक पत्र की प्रति सार्वजनिक फाइल में रख दी गई है जिसका हितबद्ध पक्षकार अनुरोध करके निरीक्षण कर सकते हैं। उपर्युक्त के मद्देनज़र और जाँच के उपरान्त यह धारित किया जाता है कि आवेदक पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) और नियम 5(3) को पूरा करता है।

19. रिकॉर्ड में उपलब्ध जानकारी के आधार पर यह निर्धारित किया जाता है कि आवेदक का उत्पादन भारतीय उत्पादन का प्रमुख हिस्सा बनता है। आवेदक और उसके समर्थक का उत्पादन भारतीय उत्पादन के प्रमुख हिस्से से भी ज्यादा है।

विवरण	2007-08	2008-09	2009-10	जाँच-अवधि
जुबीलैण्ट (आवेदक)	5,052	4,502	7,576	8,152
बालाजी एमाइन्स (समर्थक)	1,767	1,736	1,458	1,865
अन्य भारतीय उत्पादक	-	-	300	267
भारतीय उत्पादन	6,819	6,238	9,334	10,284
केवल आवेदक का हिस्सा	74%	72%	81%	79%
समर्थक सहित आवेदक का हिस्सा	100%	100%	97%	97%

- 20 . उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी निर्धारित करते हैं कि आवेदक का वर्तमान याचिका दायर करने और उस पर कायम रहने का आधार बनता है। आवेदक नियमावली के आशय के अन्तर्गत घरेलू उद्योग है।

इ. पाटन का आकलन - प्रणाली एवं प्राचल

सामान्य मूल्य

- 21 . धारा 9क(1)(ग) के अन्तर्गत किसी वस्तु के संबंध में 'सामान्य मूल्य' का आशय है:

- (i) उपधारा(6) के अन्तर्गत बने नियम के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातकर्ता देश या भूभाग में खपत के आशय से समान मद के लिए, व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में, तुलनीय कीमत; अथवा
- (ii) जब निर्यातकर्ता देश या भूभाग की घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान मद की बिक्री न हो या निर्यातकर्ता देश या भूभाग की घरेलू बाजार में विशेष बाजार स्थितियों या बिक्री की न्यून मात्रा के कारण ऐसी बिक्रियाँ सामान्य तुलना की अनुमति नहीं देती हैं तो सामान्य मूल्य या तो -

(क) उप धारा (6) के अन्तर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातकर्ता देश या भूभाग या एक उपयुक्त तृतीय देश से निर्यातित समान मद की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत होगी; या

(ख) उप धारा (6) के अन्तर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत तथा लाभ को तर्क संगत ढंग से जोड़ते हुए उद्गम के देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत।

घरेलू उद्योग के विचार

22. घरेलू उद्योग के विचार निम्नलिखित हैं:

- i) चीन को एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में माना जाए। चीन के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-7 के अनुसार किया जाना चाहिए।
- ii) किसी भी निर्यातक ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रत्युत्तर नहीं दिया है और न ही उन्होंने यह स्थापित करने के लिए कोई साक्ष्य दिया है कि बेसिक इनपुट की कीमतों में बाजार मूल्य का प्रदर्शन होता है। इन निर्यातक असहयोगकर्ता और उपर्युक्त आधार पर गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में माना जाए।
- iii) चीन की कम्पनी को एमईटी दिए जाने से पहले कानून के अन्तर्गत निर्धारित कई शर्तें हैं। नियमों में उल्लिखित किसी भी शर्त का प्रत्युत्तरदाता चीन के निर्यातक द्वारा पूरा करने से असफल रहना यह धारण करने के लिए पर्याप्त है कि प्रत्युत्तरदाता चीन की कम्पनियों को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा नहीं दिया जा सकता है और इस प्रकार सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमावली के पैरा-7 के अनुसार किया जाना चाहिए।
- iv) राज्य का पर्याप्त नियंत्रण होने के कारण चीन के उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा नहीं दिया जा सकता है।

अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

23. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित विचार व्यक्त किए:

- i) हालांकि चीन के किसी उत्पादक/निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था की स्थिति प्रदान करने का कोई दावा नहीं किया है परन्तु निर्यातकों ने इस वजह से उत्तर नहीं दिया कि चीन के निर्यातकों के लिए भारत बहुत बड़ा बाजार नहीं है और इसका आशय पाटन नहीं है।
- ii) भारत और चीन के बीच तकनीकी स्तर, बाजार के आकार में भारी अंतर है, इसलिए याचिकाकर्ता की लागत का प्रयोग सामान्य मूल्य का परिकलन करने के लिए किया

जाना अनुपयुक्त है। इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को किसी अन्य समान देश का चयन करना चाहिए।

चीन के सभी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य एवं एमईटी जॉच

24. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विगत तीन वर्षों में चीन जन गण को डब्ल्यू टी ओ सदस्यों द्वारा पाटनरोधी जॉच में गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में माना है। अतः पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8(2) में दी गई शर्तों के अनुसार चीन जन गण को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में माना गया है परन्तु यह प्रारम्भिक निर्धारण के प्रयोजन के लिए उपर्युक्त नियमों में दी गई शर्तों के अनुसार निर्यातक देश या व्यक्तिगत निर्यातक द्वारा उपर्युक्त परिकल्पना का खण्डन किए जाने के अध्यधीन है।

25. यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 8 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की परिकल्पना का खण्डन किया जा सकता है, यदि चीन जन गण के निर्यातक पैराग्राफ 8 के उप-पैरा (3) में निर्धारित प्रक्रिया के आधार पर सूचना एवं पर्याप्त साक्ष्य प्रदान करते हैं तथा इसके विपरीत सावित करते हैं। संबद्ध वस्तु के चीन से सहयोगकर्ता निर्यातकों/उत्पादकों से बाजार अर्थव्यवस्था उपचार प्रश्नावली के प्रत्युत्तर में पैराग्राफ 8 के उप पैरा (3) में यथाउल्लिखित आवश्यक जानकारी/पर्याप्त साक्ष्य दें ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित प्रक्रिया पर विचार कर सकें कि क्या -

- क. चीन जन गण में संबंधित फर्मों का कीमत, लागत और इनपुट, कच्चे माल, तकनीक एवं श्रम की लागत, आउटपुट, बिक्री और निवेश बाजार संकेतों के प्रत्युत्तर में किया जाता है जिसमें मांग एवं आपूर्ति का प्रदर्शन होता है और इस संबंध में राज्य का कोई विशेष हस्तक्षेप नहीं होता है और प्रमुख इनपुटों की लागत बाजार मूल्य को प्रतिबिम्बित करती हैं।
- ख. इन फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था द्वारा खासकर परिसम्पत्तियों के मूल्यहास, अन्य अशोध्यों, विनिमय व्यापार और ऋणों की क्षतिपूर्ति द्वारा भुगतान के संबंध में, की गई बाजार विकृतियों के अध्यधीन है।
- ग. ये फर्म दिवालियापन एवं सम्पत्ति कानून के अध्यधीन हैं जो फर्मों के प्रचालन की विधिक निश्चितता और स्थिरता की गारण्टी देता हो।

घ. विनिमय दर परिवर्तन बाजार दरों पर किया जाता है।

26. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीनजन गण से सम्बद्ध वस्तु के किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने अपनी प्रश्नावली का प्रत्युत्तर निर्दिष्ट प्राधिकारी को नहीं दिया है और न ही बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा दिए जाने का दावा किया है। चीन के उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा सहयोग न करने के मद्देनजर, सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-7 के अनुसार किए जाने का प्रस्ताव है।

चीन जन गण के सभी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण

27. चीन के उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा सहयोग न किए जाने के मद्देनजर प्राधिकारी, नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 8 का प्रयोग करने की स्थिति में नहीं हैं और उन्हें नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-7 के अनुसार कार्य करना पड़ा। इन नियमों के अनुसार चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण निम्नलिखित आधार पर किया जा सकता है।

- क. तृतीय देश की बाजार अर्थव्यवस्था में कीमत के आधार पर, या
- ख. तृतीय देश की बाजार अर्थव्यवस्था में निर्मित मूल्य पर, या
- ग. इन तृतीय देशों से भारत सहित अन्य देशों को कीमत
- घ. यदि उपर्युक्त विकल्पों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण नहीं किया जा सकता है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी सामान्य मूल्य का निर्धारण किसी अन्य तर्कसंगत आधार पर कर सकते हैं जिसमें समान उत्पादों के लिए भारत में लाभ मार्जिन सहित विधिवत समायोजित वास्तविक संदत्त या भुगतान योग्य कीमत शामिल हैं।

28. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक और प्रत्युत्तर दाता आयातक/उपभोक्ता सहित किसी भी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने तृतीय देश की बाजार अर्थव्यवस्था में लागत या कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए कोई जानकारी प्रदान नहीं की है। आवेदक ने प्रस्तुत किया कि तृतीय देश की लागत और कीमत के आधार पर सामान्यमूल्य का निर्धारण करने के लिए घरेलू बिक्री या तृतीय देश के निर्यात की बिक्री तथा उत्पादन एवं तृतीय देश में इन उत्पादकों द्वारा सहयोग के संबंध में सम्पूर्ण एवं विस्तृत आंकड़ों की जरूरत होगी। चूँकि इन बाजारों में व्याप्त कीमत एवं लागत के संबंध में कोई प्राधिकृत जानकारी उपलब्ध नहीं है, इसलिए सामान्य मूल्य का निर्धारण तृतीय

देशों की बाजार अर्थव्यवस्था में कीमत या लागत के आधार पर नहीं किया जा सकता है। चीन के किसी भी उत्पादक और/या निर्यातक ने समुचित तृतीय देश बाजार अर्थव्यवस्था के संबंध में कोई दावा नहीं किया है। प्रत्युत्तरदाता आयातक/उपभोक्ता ने सामान्य मूल्य का निर्धारण घरेलू उद्योग के लागत ढाँचे के आधार पर करने का विरोध किया है। आयातकों/उपभोक्ताओं द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरणों की विस्तृत जांच की गई। यह नोट किया गया कि प्रत्युत्तरदाता आयातकों/उपभोक्ताओं ने अपने इस तर्क के समर्थन में, कि तकनीकी के स्तर और बाजार के आकार में इतना अन्तर है कि सामान्य मूल्य का प्रस्तावित निर्धारण करना उपयुक्त नहीं होगा, कोई सत्यापन योग्य साक्ष्य नहीं दिया है। यह भी नोट किया जाता है कि चीन में उत्पादन लागत के आधार पर सामान्य मूल्य पर विचार तभी किया जा सकता है जब अनुबंध-1 के पैरा 8 में विनिर्धारित शर्तें पूरी होती हों। चीन की कम्पनियों ने बाजार अर्थव्यवस्था मानने के बारे में कोई दावा नहीं किया है। अतः प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्धारण उत्पादन लागत तथा लाभ के लिए संगत संवर्धन पर विचार करते हुए उपलब्ध सर्वोत्तम जानकारी के आधार पर किया है। अतः चीन में सामान्यमूल्य का निर्धारण भारत में बिक्री, प्रशासनिक एवं सामान्य व्यय तथा लाभ के लिए विधिवत समायोजन करने के पश्चात, उत्पादन लागत के आधार पर किया है। निर्धारण के लिए प्रस्तावित सामान्य मूल्य का उल्लेख अधोलिखित पाटन मार्जिन सारणी में किया गया है।

निर्यात कीमत

- 29 . निर्यात कीमत का निर्धारण डीजीसीआईएण्डएस से प्राप्त सौदा-वार आयात आंकड़ों के अनुरूप जाँच की अवधि के लिए आयातों की मात्रा और मूल्य पर विचार करते हुए किया गया है।
- 30 . यह नोट किया जाता है कि आवेदक ने निर्यात कीमत का निर्धारण अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय सूचनासेवा (आईबीआईएस) के आधार पर किया है। तथापि, प्राधिकारी ने डीजीसीआईएण्डएस से भी जानकारी मंगवाई। इस जानकारी की आवेदक द्वारा उपलब्ध कराई गई आईबीआईएस जानकारी के साथ तुलना की गई। इस तुलना से स्पष्ट हुआ कि डीजीसीआईएण्डएस आंकड़ों में आयातों की मात्रा एवं मूल्य का सही प्रतिबिम्बन है।

31. यह नोट किया जाता है कि प्रत्युत्तर दाता आयातकों/उपभोक्ताओं ने उत्पाद के आयातों की मात्रा एवं मूल्य के बारे में प्रस्तुतिकरण किया है। तथापि, यह नोट किया जाता है कि आयातक/उपभोक्ता ने डीजीसीआईएण्डएस के प्रकाशित आंकड़ों पर भरोसा किया है। इस संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि चूंकि विचाराधीन उत्पाद का समर्पित सीमा शुल्क वर्गीकरण नहीं है और यह कि उपभोक्ता द्वारा भरोसा किए गए सीमा शुल्क वर्गीकरण में अन्य उत्पादों को भी शामिल किया गया है, (यह तथ्य डीजीसीआईएण्डएस से प्राप्त डीजीसीआईएण्डएस सौदावार आंकड़ों से स्पष्ट हो जाता है), इसलिए प्राधिकारी द्वारा डीजीसीआईएण्डएस से प्राप्त डीजीसीआईएण्डएस के सौदावार आंकड़ों के आधार पर निर्यात कीमत का निर्धारण किया जाना उपयुक्त होगा।
32. इस प्रकार, निर्धारित कीमतें सी आई एफ कीमतें हैं। पाटनरोधी संबंधी डब्ल्यूटीओ करार और भारतीय पाटनरोधी नियमावली के अनुसार सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की तुलना समान स्तर पर, अधिमानतः फैक्टरी बाह्य स्तर पर की जानी चाहिए। इसलिए निर्यात कीमतों का समायोजन समुद्री भाड़ा, सामुद्रिक बीमा, कमीशन, अन्तर्देशीय परिवहन, पत्तन प्रभार और बैंक प्रभार, जो निर्यातक ने भारत में निर्यात की गई वस्तु के लिए किए हों, के साथ किया जाना अपेक्षित है।
33. चीन के किसी भी निर्यातक ने प्राधिकारी को सहयोग नहीं दिया। आवेदक ने बाजार सूचना के आधार पर विभिन्न समायोजनों का दावा किया है। इन व्ययों के लिए निवल निर्यात कीमत का समायोजन किया गया है। निर्धारण के लिए प्रस्तावित निर्यात कीमत का उल्लेख निम्नलिखित पाटन मार्जिन तालिका में दिया गया है। पाटन मार्जिन का निर्धारण, ऊपर यथानिर्धारित सामान्य मूल्य और निवल निर्यात कीमत के आधार पर किया गया है। यह देखा गया है कि पाटन मार्जिन पर्याप्त है और न्यूनतम सीमा से काफी ज्यादा है।

विवरण	जांच की अवधि(अमरीकी डॉलर प्रति किग्रा.)
निर्मित सामान्य मूल्य	***
निवल निर्यात कीमत	***
पाटन मार्जिन	***
पाटन मार्जिन	***
पाटन मार्जिन	80 -90%

घ. क्षति का आकलन और कारणात्मक संबंधों की जाँच

घरेलू उद्योग के विचार

34. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित विचार प्रस्तुत किए हैं:-

- क. सुगुना ने विचाराधीन उत्पाद का आयात किया और उसका भारतीय बाजार में व्यापार किया, जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई।
- ख. सम्बद्ध देश से आयात में अल्प अवधि में ही समग्र रूप से भारी वृद्धि हुई।
- ग. आयातों में यह वृद्धि न केवल समग्र रूप में भी बल्कि भारत में उत्पादन और खपत के रूप में भी थी। इस उत्पाद के आयात में जाँच की अवधि के पश्चात् समग्र एवं भारत में उत्पादन एवं खपत के संगत रूप में भी वृद्धि हुई।
- घ. सम्बद्ध देश से आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरदन हो रहा है। यह कीममत अधोरदन घरेलू उद्योग द्वारा पहले से प्रस्तुत न्यून कीमतों के बावजूद हुआ है।
- ङ. घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग में सुधार होने के बावजूद, घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा गिर गया।
- च. लाभ, निवेश पर आय तथा नकद लाभ के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में वर्ष 2009-10 तक सुधार हुआ परन्तु जाँच की अवधि में इसमें गिरावट आई।
- छ. घरेलू उद्योग की मालसूची में 2009-10 तक गिरावट आती रही परन्तु जाँच की अवधि के दौरान इनमें वृद्धि हुई।
- ज. रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता में वृद्धि हुई।
- झ. पाटन सीमा के साधन के रूप में पाटन मार्जिन काफी अधिक है।
- य. ये सभी पैरामीटर सामूहिक एवं संचयी ढंग से यह स्थापित करते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई। वास्तविक क्षति के अतिरिक्त, इस मामले के तथ्य यह स्पष्टतः स्थापित करते हैं कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों से चुनौती भी मिली।

निर्यातक, आयातक तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

35. अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में निम्नलिखित मुद्दे उठाए हैं:-

मैसर्स वर्षा मल्टीटेक ने अनुरोध किया है कि भारतीय मुर्गीपालक कृषकों तथा उद्योग के हित में कोलिन क्लोराइड के आयात पर प्रतिपाटन शुल्क नहीं लगाया जाना चाहिए। कम्पनी ने यह भी दावा किया है कि याचिकाकर्त्ता का भारत में एकाधिकार है। वर्षा मल्टीटेक ने दावा किया है कि याचिकाकर्त्ता लगभग 1500 टन का निर्यात करता है और भारतीय बाजार के लिए 8500 टन बचाता जाता है। कम्पनी ने यह भी उल्लिखित किया है कि आपूर्ति स्थिति के मद्देनजर देश में उत्पादन के मांग की कमी है। यदि निर्यात के लिए अस्वीकृति अथवा प्रतिपाटन शुल्क द्वारा उस पर रोक लगाई जाती है तो भारतीय मुर्गी पालन के लिए संकट खड़ा हो जाएगा।

- ii. पी ओ आई में 969 मीट्रिक टन के आयात आंकड़े गलत हैं। भारत में कोलिन क्लोराइड के सभी ग्रेडों के लिए 86,22 मीट्रिक टन आयात होता है जिसमें से 1467 मीट्रिक टन चीन से तथा 7155 मीट्रिक टन अन्य देशों से आता है। आवेदक द्वारा प्रस्तुत आयात के आंकड़ों की जांच तथा इसे डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ों से तुलना अपेक्षित है।
- iii. याचिकाकर्त्ता एक बड़ा उत्पादक है तथा उच्च मूल्य लेकर उसने अपने एकाधिकार का दुरुपयोग किया है। आवेदक द्वारा मूल्य में एक तरफा स्तर की बढ़ोतरी की है।
- iv. याचिकाकर्त्ता भारतीय बाजार में एकाधिकार करना चाहता है तथा उसने अन्य उत्पादकों को भी मूल्य में एक-तरफा बढ़ोतरी करने के लिए कहा।
- v. याचिकाकर्त्ता द्वारा संदर्भित माल, चाहे नीदरलैंड का हो अथवा चीन का, संगत नहीं है क्योंकि वह पिछले वर्ष के सम्बंध में है तथा पी ओ आई के नहीं है।
- vi. मार्किट शेयर के संबंध में याचिकाकर्त्ता द्वारा दिए गए आंकड़े तथा लिखित प्रस्तुतिकरण असंगत हैं। इसके अतिरिक्त, याचिकाकर्त्ता का मार्किट शेयर में उनके दावे के विपरीत बढ़ोतरी हुई है।
- vii. उत्पादन, बिक्री क्षमता उपयोग जैसे क्षति मानदंड बढ़ोतरी की प्रवृत्ति दर्शा रहे हैं तथा इनवेन्टरी में गिरावट हुई है।
- viii. पी ओ आई के दौरान याचिकाकर्त्ता के लाभ तथा रोकड़ लाभ में पर्याप्त बढ़ोतरी हुई है अतः किसी प्रकार की क्षति नहीं हुई है।

- ix. किसी प्रकार का अनौपचारिक लिंक मौजूद नहीं है क्योंकि अंडर-कंटींग दोनों वर्षों में एक सी रहने के बावजूद घरेलू उद्योग के लाभ में कमी दर्ज हुई है। इसके अतिरिक्त, आयात के मूल्य में वृद्धि हुई है जबकि घरेलू उद्योग के बिक्री मूल्य में कमी आई है।
- x. आवेदक को क्षति, यदि कोई हो, निर्यात बिक्री तथा ग्राही उपभोग में गिरावट के कारण हुई है।
- xi. घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की हिस्सेदारी में गिरावट आई है जबकि अन्य उत्पादकों की हिस्सेदारी बढ़ी है। इसके अतिरिक्त भारत में मांग, आपूर्ति की तुलना में अधिक है जैसा कि आवेदक की उत्पादन तथा बिक्री दर्शाती है।
- xii. आवेदक ने कम बिक्री मूल्य तथा लाभ में गिरावट के आधार पर क्षति का दावा किया है। अन्य भारतीय उत्पादक, न केवल कार्य के तुलनात्मक रूप से कम स्तर के बावजूद कम मूल्य पर बिक्री कर रहे हैं बल्कि लाभ भी प्राप्त कर रहे हैं।
- xiii. घरेलू आपूर्तिकर्ता की भारत में विभिन्न स्थानों में फैली इकाई की आवश्यकता के अनुसार, आपूर्ति में कमी होने के कारण कठिनाई हो रही है तथा कोलिन क्लोराइड के बदले में अन्य कोई विकल्प उपलब्ध नहीं है।
- xiv. भारतीय उपभोक्ता को न केवल गुणवत्ता में असंगतता के कारण इन मर्दों का आयात करना पड़ रहा है बल्कि भारतीय विनिर्माताओं के द्वारा निरंतर इन मर्दों की आपूर्ति के कारण भी।
- xv. आपूर्ति समय तथा गुणवत्ता में असंगतता के कारण उत्पादन को क्षति हुई है तथा उपभोक्ताओं के वित्तीय हानि भी उठानी पड़ी है।
- xvi. आवेदक बेहतर मूल्य प्राप्ति हेतु अपनी आपूर्ति की राशनिंग कर रहे हैं तथा उससे अनुचित लाभ उठा रहे हैं।
- xvii. क्षति को कोई खतरा नहीं है- 11,000 से 12,000 मीट्रिक टन की मांग होने के बावजूद, चीन से कुल 969 मीट्रिक टन का आयात हुआ, जो दर्शाता है कि बाजार में मांग का बड़ा हिस्सा अभी भी आवेदक तथा अन्य भारतीय उत्पादकों का है। इसके अतिरिक्त, चीन में उत्पादन आंकड़ों के संबंध में, किसी परामर्शदायी कम्पनी के आंकड़ों को साक्ष्य नहीं माना जा सकता।

xviii. याचिकाकर्त्ता को क्षति के खतरे का अनुमान वर्ष 2008-09 की रिपोर्ट पर आधारित है, जो पी ओ आई अथवा चालू वर्ष के संगत नहीं है तथा इन रिपोर्टों की प्राथमिकता को सत्यापित नहीं किया जा सकता।

xix. सार्वजनिक फाइल में ताजे आयात आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। चाहे जो भी हो, पी ओ आई के बाद के आंकड़े मौजूदा उद्देश्य के लिए असंगत हैं। इसके अतिरिक्त, 4 माह के आयात आंकड़ों को वार्षिक रूप देना गलत है क्योंकि आयात वैसे ही जारी नहीं रहता जैसा कि उत्पादन रहता है। इसके अतिरिक्त, तद्वरूपी उत्पादन आंकड़ों की गैर-मौजूदगी में मात्र आयात आंकड़े तथा बिक्री आंकड़े किसी उद्देश्य की पूर्ति नहीं करते।

प्राधिकारी द्वारा जांच

36. प्राधिकारी ने संबंधित पक्षों के क्षति तथा कारणात्मक सम्बंध से संबंधित आंकड़ों को नोट कर लिया है तथा उनके संबंध में मौजूदा खुलासा विवरण में संगत स्थलों पर उनका समाधान किया है।

37. उपभोक्ता के इस दावे के संबंध में कि पी ओ आई में 969 मीट्रिक टन के आयात आंकड़े गलत हैं तथा भारत में कोलिन क्लोराइड के सभी ग्रेडों का कुल 8622 मीट्रिक टन आयात हुआ, जिसमें से चीन से 1467 मीट्रिक टन तथा अन्य देशों से 7155 मीट्रिक टन था, के संबंध में प्राधिकारी ने आयात आंकड़ों की जांच की है तथा यह टिप्पणी की है कि आयातकर्त्ता ने सीमा शुल्क के वर्गीकरण 23099010 (संयुक्त पशु फीड) द्वारा प्रदान की गई जानकारी का प्रयोग किया है। यह पाया गया है कि "संयुक्त पशु फीड" विशेषतः कोलिन क्लोराइड के संबंध में नहीं है। प्राधिकारी ने, डी जी सी आई एंड एस से सौदे-वार आयात जानकारी प्राप्त की है। आयात आंकड़ों का विश्लेषण दर्शाता है कि उनमें उन उत्पादों का आयात भी शामिल है जो इस जांच की परिधि में नहीं आते। अतः डी जी सी आई एंड सी द्वारा प्रकाशित आंकड़ों के आधार पर आयात की मात्रा अनप्रयुक्त है तथा सौदे-वार भी नहीं है। क्योंकि, उत्पाद विवरण के साथ वास्तविक सौदे-वार आयात आंकड़े उपलब्ध हो गए हैं, अतः इस जांच हेतु उन्हें ही आधार माना गया है।

38. प्राधिकारी ने नोट किया है कि प्रतिवादी उपभोक्ता द्वारा घरेलू उद्योग द्वारा उत्पाद की राशनिंग, एकाधिकार, एक तरफा मूल्य बढ़ोतरी, देश में मांग-आपूर्ति के अंतर, घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति अथवा उत्पादन की गुणवत्ता की असंगतता, उपभोक्ता को वित्तीय हानि के संबंध में, जिसके कारण क्षति हुई, कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराए गए हैं। घरेलू उद्योग द्वारा उपभोक्ता के इन कथित अपराधों का विरोध किया गया है।

39. ए डी नियमावली के अनुबंध-II में (क) पाटन आयात की मात्रा तथा समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में मूल्य पर पाटन आयात के प्रभाव; तथा (ख) ऐसे उत्पादों के संबंध में घरेलू उत्पादकों पर

प्रभावी परिणाम, दोनों की ही एक वस्तुनिष्ठ जांच का प्रावधान किया गया है। पाटन आयात की मात्रा के प्रभावी परिणाम की जांच करते हुए प्राधिकारी को समग्र दृष्टि से पाटन आयात में अथवा भारत में उत्पादन अथवा उपभोग के संबंध पर्याप्त बढ़ोतरी की जांच करनी अपेक्षित था। पाटन आयात के मूल्य पर प्रभाव के संबंध में, प्राधिकारी को चंद जांच करनी थी कि क्या भारत में वैसी वस्तुओं के मूल्य में पाटन आयात के कारण कमी आई थी अथवा इसके कारण उस मूल्य संवृद्धि में नियंत्रण हुआ जिसके कारण अन्यथा मूल्य वृद्धि अवरुद्ध हुई हो।

40. जहां तक, घरेलू उद्योग पर पाटन आयात के प्रभावों का संबंध है, ए डी नियमावली के अनुबंध-II का पैरा (IV) निम्न उल्लिखित करता है।

"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटन आयात के प्रभाव की जांच में, उस उद्योग के संबंध में बिक्री, लाभ आउट-पुट, मार्केट शेयर, उत्पादक क्षमता, निवेश या लाभ, क्षमता उपयोग सहित सभी संगत आर्थिक तथ्यों सूचकांकों का मूल्यांकन; तथा घरेलू मूल्य, पाटन की मार्जिन सीमा, रोकड़ प्रवाह में वास्तविक तथा सक्षम नकारात्मक प्रभाव, इंटेंसिटी, रोजगार, वेतन, संवृद्धि, पूंजी जुटाने की क्षमता आदि तथ्यों का मूल्यांकन शामिल होगा"।

41. प्राधिकारी ने तथ्यों तथा संबंधित पक्षों के वितर्कों के आधार पर क्षति मानदंडों की वस्तुनिष्ठ जांच की है।

मात्रा का प्रभाव

क. मांग का मूल्यांकन

42. घरेलू उपभोग/संबंधित वस्तु की मांग, भारतीय उत्पादक की बिक्री मात्रा, जिसका सार निम्न तालिका में है, के मूल्यांकन हेतु भारत के कुल आयात आंकड़ों में शामिल किया गया है। यह पाया गया है कि मूल वर्ष तथा पी ओ आई के बीच विचारार्थ वस्तु के उत्पादन की मांग में 86 सूचकांक पाइंट की वृद्धि हुई है।

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	पीओआई
कैपटिव सहित घरेलू उद्योग की बिक्री	मीट्रिक टन	4,506	4,962	7,471	8,094
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	मीट्रिक टन	1,582	2,311	1,733	2,004

चीन से आयात	मीट्रिक टन	0	0	393	971
अन्य देशों से आयात	मीट्रिक टन	49	17.2	0	32
कुल योग/उपभोग	मीट्रिक टन	6,137	7,290	9,597	11,101
प्रवृत्ति	सूचक	100	119	156	181

ऊपर की तालिका में दिए गए आंकड़े 60 प्रतिशत सान्द्रण के कोलिन क्लोराइड के हैं।

43. संबंधित पक्ष ने वितर्क किया है कि भारतीय उत्पादक देश में उत्पाद की मांग पूरी नहीं कर सकते। तथापि, नोट किया गया है कि याचिकाकर्ता की स्वयं 9000 मीट्रिक टन की क्षमता है। इसके अतिरिक्त, मैसर्स बालाजी अमाइन्स ने दर्शाया है कि समतुल्य आधार पर कम्पनी के द्वारा अधिकतम उत्पादन 1865 मीट्रिक टन था। अतः जांच अवधि के दौरान 11,101 मीट्रिक टन की मांग की तुलना में, घरेलू उद्योग इस मांग को पूरा करने की स्थिति में था।

ख. आयात मात्रा तथा बाजार हिस्सेदारी

44. पाटन आयात की मात्रा की जांच करते हुए, निर्दिष्ट प्राधिकारी को भारत में उत्पादन अथवा उपभोग की दृष्टि से पाटन आयात की मांग में अत्यधिक बढ़ोतरी की जांच करनी अपेक्षित थी। प्रतिपाटन शुल्क नियमावली के अनुबंध-II (ii) में निम्न प्रावधान है।

"पाटन आयात की मात्रा की जांच करते हुए, संबंधित प्राधिकारी को भारत में उत्पादन अथवा उपभोग की दृष्टि से पाटन आयात की मांग में अत्यधिक बढ़ोतरी की जांच करनी अपेक्षित होगा।"

45. आवेदक ने दावा किया है कि विषय गत वस्तुएं कई सीमा शुल्क वर्गीकरणों में आयात की जा रही हैं। डी जी सी आई एंड सी से सौदे-वार आयात जानकारी मांगी गई तथा इसका आई बी आई एस के संदर्भ में विश्लेषण तथा तुलनात्मक अध्ययन दर्शाता है कि मौजूदा जांच के संबंध में डी जी सी आई एंड एस के सौदे-वार आयात आंकड़े का अपनाया जाना उपयुक्त होगा।

46. यह पाया गया है कि उत्पादन तथा उपयोग की समय अथवा पारस्परिक रूप में पी ओ आई में पाटन आयात में पर्याप्त वृद्धि हुई है जैसा कि निम्न तालिका दर्शाती है:

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	पीओआई
कैपटिव सहित घरेलू उद्योग की बिक्री	मीट्रिक टन	4,506	4,962	7,471	8,094
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	मीट्रिक टन	1,582	2,311	1,733	2,004
चीन से आयात	मीट्रिक टन	0	0	393	971
अन्य देशों से आयात	मीट्रिक टन	49	17.2	0	32
कुल योग/उपभोग	मीट्रिक टन	6,137	7,290	9,597	11,101
प्रवृत्ति	सूचक	100	119	156	181
कुल आयात के संदर्भ में आयात की प्रतिशतता	%	-	-	100	97
मांग	%	-	-	4.21	8.96
कुल उत्पादन	%	-	-	4.21	9.44
मांग की भागीदारी					
कैपटिव सहित घरेलू उद्योग	%	73.43	68.07	77.85	72.92
अन्य भारतीय उत्पादक	%	25.77	31.69	18.06	18.05
चीन	%	-	-	4.09	8.74
तृतीय देश	%	0.80	0.24	-	0.29

47. उपर्युक्त से देखा गया है कि:

क. वर्ष 2007-08 में तथा 2009-09 में आयात बिल्कुल नहीं किया जाता था। तथापि, 2009-10 में विषयगत देशों से, आयात की पर्याप्त मात्रा सूचित की गई जिसकी पी ओ आई में मात्रा और बढ़ गई।

ख. समय आयात के संदर्भ में आयात में पर्याप्त बढ़ोतरी हुई तथा भारत में उत्पादन तथा उपभोग की दृष्टि के संबंध में पर्याप्त बढ़ोतरी हुई।

ग. मूल वर्ष 2008-09 में घरेलू उद्योग की मार्केट भगीदारी में गिरावट आई, 2009-10 में बढ़ोतरी हुई तथा फिर पी ओ आई में गिरावट आई। उसी के साथ, विषयगत देशों से आयात, जो 2007-08 तथा 2008-09 में बिल्कुल नहीं था, वह 2009-10 के 4.099 प्रतिशत की तुलना में पी ओ आई में 8.74 प्रतिशत हो गया।

आयात का मूल्य पर प्रभाव

48. मूल्यों पर पाटन आयात के प्रभाव के संबंध में, निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा यह जांच करनी अपेक्षित थी कि क्या भारत में वैसे अन्य उत्पादनों के मूल्यों की तुलना में पाटन आयात के कारण मूल्य में पर्याप्त कटौती हुई अथवा क्या ऐसे आयात के कारण मूल्य वृद्धि, जो अन्य का हुई होती होती, में पर्याप्त अवरोध हुआ।

क. मूल्य में कटौती

49. मूल्य-कटौती की सीमा-निर्धारण करने के क्रम में, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने आयात के लैंडिंग मूल्य के साथ घरेलू उद्योग की कुल बिक्री की तुलना की। सभी छूट तथा कर रियायत को घटाने के बाद कुल बिक्री की संगणना की गई। यह देखा गया है कि विषयगत वस्तु के आयात का लैंडिंग मूल्य घरेलू उद्योग के बिक्री मूल्य से बहुत कम था, जिसके कारण मूल्य में पर्याप्त गिरावट आई।

विवरण	यूनिट	2009-10	पीओआई
आयात मात्रा - चीन	मी. टन	393	971
आयात मूल्य - चीन	लाख रुपए में	123.14	302.65
आकलन योग्य मूल्य	रुपए/किग्रा.	31.34	31.19
सी आई एफ आयात कीमत -चीन	रुपए/किग्रा.	31.03	30.87
आयातों की उतराई कीमत	रुपए/किग्रा.	33.76	33.59

निवल बिक्री कीमत	रुपए/किग्रा.	***	***
कीमत अधोरदन	रुपए/किग्रा.	***	***
कीमत अधोरदन (%)	%	***	***
कीमत अधोरदन (%)	रैंज %	30-40	30-40

ख. कीमत निग्रहण एवं अवनमन

50. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग और लागत उतार-चढ़ाव तथा चीन से आयातों की उतराई कीमत की यह जांच करने के लिए तुलना की गई कि पाटित आयातों के प्रभाव से कीमत का काफी अवनमन हुआ है या इसने कीमतों को बढ़ने से रोका है जो अन्यथा काफी हद तक बढ़ गई होती।

विवरण	यूनिट	2007-08	2008-09	2009-10	पीओआई
बिक्री की लागत	रुपए/किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	107	88	99
औसत बिक्री कीमत	रुपए/किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	110	106	105
चीन से आयातों की उतराई कीमत	रुपए/किग्रा.	आयात नहीं	आयात नहीं	33.45	33.28

51. यह देखा गया कि जांच की अवधि में विगत वर्ष की तुलना में बिक्री लागत में रुपए प्रति *** मी.टन की वृद्धि हुई, वहीं इसकी बिक्री लागत में रुपए प्रति *** मी.टन की गिरावट आई। इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि जबकि बिक्री लागत बढ़ी, वही बिक्री कीमत कुछ घट गई। अतः पाटन के प्रभाव के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों का निग्रहण हुआ, और इस कारण उसने उन कीमतों का बढ़ना रोक दिया जो पाटन के अभाव में बढ़ गई होती। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने अपनी कीमतें घट दीं, जबकि हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया कि घरेलू उद्योग के अक्सर कीमतें बढ़ाई हैं।

52. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लिए गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण किया है जिसकी बिक्री कीमत और उतराई कीमत की तुलना निम्नलिखित है :

विवरण	यूनिट	चीन पी आर
गैर क्षतिकारी कीमत	रुपए/किग्रा.	***
आयातों की उतराई कीमत	रुपए/किग्रा.	33.59

क्षति मार्जिन	रुपए/किग्रा.	***
उतराई कीमत के प्रतिशत के रूप में क्षति मार्जिन	%	***
क्षति मार्जिन %	रैंज %	55-65

53. यह देखा जाता है कि आयातों की उतराई कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री लागत और गैर क्षतिकारी कीमत से बहुत कम है। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत, घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित गैर क्षतिकारी कीमत से बहुत कम है।

घरेलू उद्योग के आर्थिक पैरामीटर्स

54. पाटनरोधी नियमावली का अनुबंध-2 यह अपेक्षा करता है कि क्षति निर्धारण में उन उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की उद्देश्यपरक जांच शामिल होनी चाहिए। इन उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इनके आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध में पाटनरोधी नियमावली में पुनः प्रावधान है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में उन सभी संगत आर्थिक तथ्यों तथा अभिसूचकों का उद्देश्यपरक एवं पक्षपात रहित मूल्यांकन शामिल होना चाहिए जिनका उद्योग पर प्रभाव पड़ता है जिमसे बिक्री में वास्तविक एवं संभावित गिरावट, लाभ, आउटपुट, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश से आय या क्षमता उपयोग; घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले तथ्य, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकदी प्रवाह पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश उगाहने की क्षमता शामिल है। घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति पैरामीटरों का वर्णन निम्नलिखित है :

क. क्षमता, उत्पादन, बिक्री की मात्रा और क्षमता उपयोग

55. घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री मात्रा के संबंध में जानकारी निम्नलिखित तालिका में दी गई है :

विवरण	यूनिट	2007-08	2008-09	2009-10	पीओआई
क्षमता	मी. टन	9,000	9,000	9,000	9,000
उत्पादन	मी. टन	5,052	4,502	7,576	8,152
क्षमता उपयोग	%	56	50	84	91
बिक्री मात्रा					

□ घरेलू	मी. टन	4,446	4,913	7,409	8,094
□ ग्राही	मी. टन	60	49	61	-
□ निर्यात	मी. टन	285	49	59	62
कुल बिक्री	मी. टन	4,791	5,011	7,530	8,156
मांग	मी. टन	6,137	7,290	9,597	11,101

56. यह देखा गया है कि देश में इस उत्पाद की मांग, उपलब्ध क्षमता की तुलना में बहुत कम थी। यह नोट किया जाता है कि उत्पादन में वर्ष 2008-09 में कमी आई और तत्पश्चात उसमें वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया कि देश में इस उत्पाद की मांग में कमी होने के कारण यह वस्तु का उस सीमा तक उत्पादन करने में सक्षम नहीं थे, जिस सीमा तक उन्हें करना चाहिए था। चूंकि क्षति अवधि के दौरान इस उत्पादन मांग में वृद्धि इसलिए उसके उत्पादन और क्षमता निर्माण में वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई।

ख. बाजार हिस्सा

57. बाजार हिस्सा से संबंधित जानकारी निम्नलिखित तालिका में दी गई है। यह देखा जा सकता है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वर्ष 2008-09 के दौरान गिरावट आई, वर्ष 2009-10 में इसमें वृद्धि हुई तथा जांच की अवधि में इसमें फिर कमी आई। उसी समय के दौरान संबद्ध देश से आयात जो 2007-08 और 2008-09 में मौजूद ही नहीं थे, वर्ष 2009-10 के 4.09 प्रतिशत के स्तर से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 8.74 प्रतिशत हो गए। यह देखा जा सकता है कि वर्ष 2008-09 में बाजार हिस्से में गिरावट अन्य घरेलू प्रतिस्पर्धियों को बाजार हिस्सा मिल जाने के कारण आई और इस कारण यह कमी आयातों की वजह से नहीं थी। घरेलू उद्योग ने अपने खोय हुए बाजार हिस्से को 2009-10 में पुनः हासिल कर लिया और वर्ष 2009-10 में इसका मांग में हिस्सा पिछले वर्ष से उच्चतर था। तथापि घरेलू उद्योग ने जांच की अवधि में अपना बाजार हिस्सा खो दिया और यह पाटित आयातों के कारण हुआ।

मांग में बाजार हिस्सा	यूनिट	2007-08	2008-09	2009-10	पीओआई
घरेलू उद्योग की बिक्री	%	73.43	68.07	77.85	72.92
अन्य भारतीय उत्पादक	%	25.77	31.69	18.06	18.05
संबद्ध आयात	%	-	-	4.09	8.74
अन्य देशों से आयात	%	0.80	0.24	-	0.29

ग. निवेश पद लाभ/हानि, प्रति लाभ, नकद लाभ

58 . विचाराधीन उत्पाद, निवेश पर प्रतिलाभ और नकद लाभ से संबंधित घरेलू परिचालनों की लाभ प्रदत्त के बारे में सूचना नीचे की सारणी में दी गई है :

विवरण	यूनिट	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11
कर से पहले लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	615	6035	1988
नकद लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	166	613	281
ब्याज से पहले लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	212	1102	527
ब्याज और मूल्य हास से पहले लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	140	425	242
प्रति इकाई निवेश पर	%	***	***	***	***
प्रति लाभ (एन एफ ए)					
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	214	916	262

59 . यह देखा गया है कि घरेलू उत्पाद को मूल वर्ष में वित्तीय हानि हो रही थी। घरेलू उत्पाद ने दावा किया है कि देश में उत्पाद की मांग की कमी के कारण ऐसा हुआ और उद्योग द्वारा उसके परिणामस्वरूप कीमतें कम रखी गईं। घरेलू उत्पाद उतना उत्पादन नहीं कर सका जितना वह पर्याप्त मांग न होने की स्थिति में करता। इस प्रकार उपरि खर्च अधिक होता (घरेलू उत्पाद ने दावा किया है कि यदि घरेलू उत्पाद ने अधिक उत्पादन किया होता तो उसे लाभ होता)। इसलिए घरेलू उत्पाद ने अप्रयुक्त क्षमताओं निश्चित व्यय किया जिससे वर्ष 2007-08 में हानियां हुईं। वर्ष 2008-09 और इसके बाद वर्ष 2009-10 में लाभ हुआ। तथापि, चीन से काफी अधिक आयात किए जाने और चीनी आयातों द्वारा दाम कम किए जाने के कारण पी ओ आई में बहुत अधिक गिरावट आई।

60 . नीचे दी गई सारणी में प्रति इकाई लाभप्रदता दर्शाई गई है। यह नोट किया जाता है कि वर्ष 2008 -09 में हानि होने पर वर्ष 2008-09 और 2009-10 में घरेलू उत्पाद की लाभ प्रदत्ता में सुधार हुआ और फिर इसके बाद पी ओ आई में काफी अधिक गिरावट आई।

विवरण	यूनिट	2007-08	2008-09	2009-10	पीओआई
बिक्री की लागत	रुपए/मी. टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	107	88	99
विक्रय मूल्य	रुपए/किलोग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	110	106	105
लाभ/(हानि)	रुपए/किलोग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	556	3621	1092
नकद लाभ	रुपए/किलोग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	150	368	154
ब्याज से पहले लाभ	रुपए/किलोग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	192	661	289
ब्याज, मूल्यहास और कर से पहले लाभ	रुपए/किलोग्रा.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	127	255	133
	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	214	916	262

61 . यह देखा गया है कि नियोजित पूँजी पर प्रतिलाभ और नकद लाभ में वर्ष 2009-10 तक सुधार हुआ और उसके बाद देश में उत्पाद के पाटन के दौरान पीओआई में काफी गिरावट आई। विचाराधीन उत्पाद की लाभप्रदता में गिरावट आई से पीओआई में निवेश पर लाभ प्रदत्ता और नकद लाभ में भी गिरावट आई।

62 . प्रतिवादी निर्यातक/उपभोक्ता ने सूचित किया है कि जहाँ घरेलू उद्योग ने अपने लाभों में गिरावट का दावा किया है वहाँ दूसरे घरेलू उत्पादक बेचने और लाभ अर्जित करने में सफल रहे हैं। इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि इस बात के कोई सबूत नहीं हैं कि घरेलू उद्योग की तुलना में उनका घरेलू उत्पादक कहीं अधिक लाभ अर्जित कर रहे हैं।

घ. माल सूचियाँ

63 . घरेलू उद्योग की माल सूची से संबंधित सूचना नीचे की सारणी में दी गई है, यह देखा गया है कि वर्ष 2009-10 तक स्टॉक में गिरावट आई है और फिर बिक्री की मात्रा में वृद्धि होने के बावजूद पी ओ आई में वृद्धि हुई है।

स्टॉक (मात्रा)	यूनिट	2007-08	2008-09	2009-10	पीओआई
□ प्रारंभिक स्टॉक	मी. टन	***	***	***	***
□ अंतिम स्टॉक	मी. टन	***	***	***	***
□ औसत स्टॉक	मी. टन	469	344	113	133

ड. रोजगार और मजदूरी

64. घरेलू उद्योग में रोजगार से संबंधित सूचना निम्नलिखित सारणी में दी गई है। इससे पता चलता है कि खराब अवधि के दौरान रोजगार बढ़ा है। इसके अलावा, विभिन्न उत्पादों के लिए कंपनी के समग्र कार्यनिष्पादन के अनुसार मजदूरी में बढ़ा हुआ भुतान किया गया है।

विवरण	यूनिट	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11
रोजगार	संख्या	18	20	22	24
मजदूरी	रुपए लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	91	96	117

च. उत्पादकता

विवरण	यूनिट	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11
क्षति कर्मचारी उत्पादकता	मी. टन	281	225	344	340
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	80	123	121
प्रतिदिन उत्पादकता	मी. टन	14	13	22	23
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	89	150	161

65. उपर्युक्त सारणी से यह पता चलता है कि वर्ष 2008-09 को छोड़कर मूल वर्ष की तुलना में पीओआई की प्रति कर्मचारी उत्पादकता और प्रति दिन उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

छ. पाटन मार्जिन

66. संबद्ध देश से पाटन मार्जिन न केवल निर्धारित सीमा से अधिक है बल्कि महत्वपूर्ण भी है।

ज. घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

67. संबद्ध देश और अन्य देशों से आयात कीमतों पर लागत ढांचे, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा, आयात पाटन करने के अलावा अन्य कारक जो घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित कर सकते हैं, विचार करने से पता चलता है कि संबद्ध देशों से आयातित माल का भू-मूल्य, घरेलू उद्योग के बिक्री मूल्य से कम है जो भारतीय बाजार में कीमत कम करने के कारण है। दूसरे देशों से विचाराधीन उत्पाद का आयात कम मात्रा में हुआ है। इस उत्पाद का कोई सक्षम एवजी नहीं है। उत्पाद की मांग में काफी वृद्धि हो रही थी और यह घरेलू बाजार के सामने कीमत निरुद्धता के लिए यह कारक जिम्मेदार नहीं हैं। घरेलू उद्योग की कीमतों के लिए एक कारक, संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु की आयात की कीमतें और घरेलू उद्योग की उत्पादन की लागत है। जैसाकि सूचना से पता चलता है, घरेलू उद्योग को ऐसी कीमत वसूलने से रोका गया है जो उत्पादन की लागत को पूरा कर सके और उचित लाभ अर्जित करें।

झ. पूंजी जुटाने की क्षमता

68. घरेलू उद्योग, एक बहु-उत्पाद कंपनी है। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि यदि वर्तमान स्रोतों से पाटन जारी रहता है तो पूंजी जुटाने की घरेलू उद्योग की क्षमता प्रभावित होगी।

ञ. वृद्धि

69. उत्पादन और बिक्री जैसे मात्रा पैरामीटरों में वृद्धि से सकारात्मक प्रवृत्ति का पता चलता है। देश में वर्तमान क्षमताओं के बावजूद बाजार के हिस्से में नकारात्मक वृद्धि का पता चलता है। नियोजित पूंजी पर लाभ, नकद लाभ और प्रतिफल जैसे कीमत पैरामीटरों में वृद्धि वर्ष 2009-10 तक सकारात्मक थी और देश में उत्पाद का अत्यधिक पाटन होने से पी ओ आई में यह नकारात्मक हो गया घरेलू उद्योग में समग्र वृद्धि प्रतिकूल रही।

ट. हानि संबंधी निष्कर्ष

70. उक्त स्थिति से प्राधिकारी निम्नानुसार निष्कर्ष निकालता है :

- (i) संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद का आयात न केवल समग्र रूप में बढ़ा है, परन्तु वर्ष 2003-10 और जांच अवधि के दौरान उत्पादन और खपत के रूप में भी बढ़ा है।
- (ii) संबद्ध देशों आयात घरेलू उद्योग की कीमतों को कम रहे हैं। यह कीमत अघोरदन घरेलू उद्योग द्वारा पहले से ही प्रस्तुत कम कीमतों के बावजूद हुआ है।

- (iii) जहां पी ओ आई में घरेलू उद्योग की उत्पादन की गई लागत में वृद्धि हुई है वहां विक्रय मूल्य में मामूली गिरावट आई है। इसलिए पाटन का यह प्रभाव हुआ कि घरेलू उद्योग की कीमतों को निरुद्ध करना पड़ा और कीमतों को बढ़ने से रोकना पड़ा जो पाटन न होने की दशा में होते।
- (iv) यद्यपि घरेलू उद्योग ने उत्पादन बिक्री और उपयोग क्षमता में वृद्धि हुई है लेकिन घरेलू उद्योग से बाजार के हिस्से में गिरावट आई है।
- (v) निवेश पर लाभ, प्रतिलाभ और नकद लाभ के संबंध में घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन में वर्ष 2009-10 तक सुधार हुआ और पी ओ आई में गिरावट आई।
- (vi) घरेलू उद्योग की मालसूचियों में वर्ष 2009-10 तक गिरावट आई और एक बार फिर पी ओ आई में वृद्धि हुई।
- (vii) पाटन मार्जिन बहुत अधिक है।

71. उपर्युक्त स्थिति के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि सामूहिक और संचयी, सभी पैरामीटरों से यह सिद्ध होता है कि घरेलू उद्योग को मूर्त हानि हुई है।

छ. मूर्त हानि का खतरा

72. मूर्त हानि के अलावा, घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि विचाराधीन उत्पाद के पाटन किए गए आयात से घरेलू उद्योग को मूर्त होने का खतरा हो गया है। घरेलू उद्योग के विवादित दावों के संबंध में विरोधकर्ता इच्छुक पक्षों द्वारा कोई दस्तावेजी सबूत प्रस्तुत नहीं किया गया। प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग और विरोध करने वाले इच्छुक पक्षों द्वारा किए गए दावों की जांच की। इस संबंध में निम्नलिखित संगत है :

- (i) यह देखा गया है कि हाल की अवधि में आयात वर्ष 2007-08 2008-09 में 0 से बढ़कर वर्ष 2009-10 में 393 मी. टन और 2010-11 में 971 हो गया।
- (ii) आयातित और घरेलू उत्पादों की कीमत में काफी अंतर है। आयात उस कीमत में किए जा रहे हैं जिनका घरेलू कीमती में अधोगति या निरुद्ध करने वाला प्रभाव होगा और फिर इससे अधिक मांग में वृद्धि होने की संभावना होगी।
- (iii) घरेलू उद्योग द्वारा फार्म में प्रदान किए गए सबूत या चीन में एजेंसी द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट से पता चलता है कि चीनी उत्पादकों द्वारा सृजित क्षमताएं, उनकी घरेलू मांग से कहीं अधिक हैं।
- (iv) आवेदक द्वारा प्रदान की गई सूचना, जिसे नीचे दर्शाया गया है, से पता चलता है कि चीनी उत्पादकों/आपूर्तिकर्ताओं की निर्यात उन्मुखता काफी अधिक है और यह 51-100

प्रतिशत के बीच है। सूचना से यह भी पता चलता है कि इस उत्पाद में कई चीनी एजेंसियों की मौजूदगी है।

चीनी उत्पादक	निर्यात उन्मुखता
हेवी ग्लोबल फोडर एडिटिव कंपनी लिमिटेड	61% - 70%
चांगशा यांरा इंडस्ट्री कंपनी लिमिटेड	91% - 100%
सिसिंग सिटी कोलाइन क्लोराइड कंपनी लिमिटेड	100%
जी कोलाइन लिमिटेड (कोलाइन क्लोराइड) .	51-61%
कैंझाऊ ह्युयू इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट ट्रेड कंपनी लिमिटेड	91-100%
किंगडावो यिजिया ह्युआई इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट कं. लि.	70%
बी लॉग कोलाइन इंडस्ट्रियल कार्पो.	100%
कैंझाऊ गोल्डलियन कैमिकल्स कं. लि.	61% - 70%
क्विनहुआंगडाओ साइनोकैम इंप. एंड एक्सपोर्ट कं. लि.	81% - 90%
हेबी कंगडाली फार्मास्यूटिकल कं. लि.	40%
लियोओचेंग रॉगघेंडग कैमिकल्स लि.	80%
जिनान एशिया फार्मास्यूटिकल कंपनी लिमिटेड	41-60%

73. प्राधिकारी का यह प्रस्ताव है कि घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न प्रकार के सामूहिक और संचयी पैरामीटरों से स्थापित होता है कि आयात, घरेलू उद्योग को मूर्त हानि होने का खतरा है।

ज. कारणात्मक संबंध

74. आवेदक ने निम्नलिखित अनुरोध किया :

क) हानि के अन्य सूचीबद्ध कारकों के कारण घरेलू उद्योग को हानि नहीं हुई है।

ख) कीमत कम करने और इसके परिणामस्वरूप बाजार के हिस्से की हानि होने, बिक्री के अवसर न होने और इसके परिणामस्वरूप उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव होने और निवेश पर क्षमता उपयोग, लाभ प्रतिलाभ और नकद प्रवाह जैसे कारकों से पता चलता है कि उत्पाद के पाटन के कारण घरेलू उद्योग को हानि हुई है।

75. ए डी नियमों के अनुसार प्राधिकारी को अन्य बातों के साथ-साथ पाटन किए गए आयातों को छोड़कर किसी अन्य ज्ञात कारक की जांच करनी अपेक्षित है जो इसी बीच घरेलू उद्योग को हानि पहुंचा रहा है ताकि इन अन्य कारकों से हुई हानि को पाटन किए गए आयातों के साथ न जोड़ा जा सके। जो

कारक इस संबंध में संगत हो सकते हैं उनमें अन्यो के साथ-साथ पाटन किए गए आयातों की न बेची गई मात्रा और कीमत, उपभोग की पद्धतियों में मांग या परिवर्तनों का संकुचन, विदेशी और घरेलू उत्पादकों की व्यापारिक प्रतिबंधात्मक प्रक्रिया और उनके बीच प्रतिस्पर्धी, प्रौद्योगिकी में विकास और निर्यात कार्यनिष्पादन और घरेलू उद्योग की उत्पादकता शामिल हैं। इस बात की जांच की गई थी कि क्या ए डी नियमों के तहत सूचीबद्ध इन अन्य पैरामीटरों ने घरेलू उद्योग को हानि पहुंचाने में योगदान किया होगा। इसमें पाया गया कि :

- क) अन्य देशों से आयात की मात्रा और कीमत : प्राधिकारी ने यह नोट किया कि पी ओ आई में अन्य देशों से विचाराधीन उत्पाद का बहुत कम मात्रा में आयात हुआ है। इस प्रकार अन्य देशों से किए गए आयात से घरेलू उद्योग को हानि नहीं हो सकती।
- ख) मांग में संकुचन और उपभोग की पद्धति में परिवर्तन : यह नोट किया गया है कि मूल वर्ष की तुलना में जांच पड़ताल की अवधि में संबद्ध माल की मांग में काफी वृद्धि हुई है। उपभोग पद्धति में भी परिवर्तन के कोई संकेत नहीं हैं।
- ग) विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिबंधात्मक व्यापारिक व्यवहार : संबद्ध माल का आयात पर किसी भी तरह का प्रतिबंध नहीं है और देश में मुक्त रूप से आयात योग्य हैं। घरेलू उत्पादक संबद्ध वस्तु की भू कीमतों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। घरेलू उद्योग की कीमत, संबद्ध वस्तु की भू-कीमत से काफी प्रभावित होती है। इसके अलावा किसी भी इच्छुक पक्ष ने ऐसा कोई भी सबूत पेश नहीं किया है जिससे यह पता चले कि विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्तों में कोई परिवर्तन किया गया है।
- घ) प्रौद्योगिकी का विकास : किसी भी इच्छुक पक्ष ने यह मुद्दा नहीं उठाया है कि प्रौद्योगिकी में किसी महत्वपूर्ण विकास के संबंध में ऐसी कोई सूचना नहीं है जो घरेलू उद्योग को हानि पहुंचाने का मुख्य कारण हो।
- ङ) निर्यात कार्यनिष्पादन : प्राधिकारी ने नोट किया कि घरेलू उद्योग के निर्यात की मात्रा लगभग उसी स्तर पर रही जो पीओआई और इससे पहले दो वर्ष के दौरान थी। इस प्रकार निर्यात में संभावित गिरावट वह कारक नहीं है जिसके कारण घरेलू उद्योग को हानि हुई हो। इसके अलावा, घरेलू उद्योग ने निर्यात कार्यनिष्पादन पर पृथक सूचना प्रदान की है। निर्यात लाभ प्रदत्ता को छांट दिया गया है और घरेलू परिचालनों से संबंधित लाभ प्रदाता पर ही विचार किया गया है।

76. प्राधिकारी ने नोट किया कि यद्यपि सूचीबद्ध ज्ञात अन्य कारकों से घरेलू उद्योग को हानि होने का पता नहीं चलता है फिर भी निम्नलिखित पैरामीटर दर्शाते हैं कि पाटन किए गए आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हानि हुई है :

- क) विचाराधीन उत्पाद का आयात काफी अधिक बढ़ा है। तदनुसार जहां संबद्ध देश के बाजार के हिस्से में बढ़ोतरी हुई है वहां घरेलू उद्योग में वर्ष 2009-10 और पी ओ आई के बीच इसमें गिरावट आई है।
- ख) संबद्ध देश के आयात से घरेलू उद्योग की कीमतों में अत्यधिक कमी हो रही है।
- ग) जहां विगत वर्ष की तुलना में पी ओ आई में घरेलू उद्योग के उत्पादन की लागत में वृद्धि हुई है वहां बिक्रय मूल्य में मामूली कमी आई है। इस प्रकार घरेलू उद्योग के सामने आई कीमत घटाने की स्थिति ने कीमत बढ़ने से उत्पन्न स्थिति के फलस्वरूप अपनी कीमत नहीं बढ़ने दी। इस प्रकार आयात, घरेलू कीमतों को निरुद्ध कर रहे हैं।
- घ) नियोजित पूंजी पर घरेलू उद्योग के लाभ और प्रतिलाभ में गिरावट आने से आयातों का पाटन हो रहा है।

77. उपर्युक्त स्थिति को देखते हुए प्राधिकारी का यह निष्कर्ष निकालने का प्रस्ताव है कि घरेलू उद्योग को हानि हुई है और घरेलू उद्योग को यह हानि संबद्ध देश से आयातों का पाटन किए जाने के कारण हुई है।

झ. क्षति की मात्रा और पाटन मार्जिन

78. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण नियमों में निर्धारित सिद्धांतों के आधार पर किया है घरेलू उद्योग की इस गैर क्षतिकारी कीमत की तुलना संबद्ध देश से संबद्ध आयातों की उतरायी मूल्य से की ताकि क्षति मार्जिन का निर्धारण किया जा सके। इस प्रकार क्षतिमार्जिन का निर्धारण निम्नवत किया गया है।

क्षति मार्जिन को दर्शाती हुई तालिका

विवरण	रु. प्रति कि.ग्रा.	अमेरिकी डालर प्रति कि.ग्रा.
गैर क्षतिकारी कीमत	***	***
आयात की उतरायी कीमत	33.28	0.72
क्षतिमार्जिन	***	**
क्षतिमार्जिन प्रतिशत	***	***
क्षतिमार्जिन (रेंज प्रतिशत)	55%-65%	55%-65%

79. निर्धारित पाटन मार्जिन क्षतिमार्जिन का स्तर महत्वपूर्ण माना गया है

भारतीय उद्योग के हित

79. प्राधिकारी ने नोट किया कि सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन पाटन की अनुचित व्यापारिक प्रक्रियाओं द्वारा घरेलू उद्योग को हुई हानि को दूर करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा की स्थिति फिर स्थापित की जा सके जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपाय करने से किसी भी तरह से संबद्ध देश आयात नहीं रोका जाएगा। और इसलिए उपभोक्ताओं को वस्तु की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। यह बात स्वीकार की गई कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तु का उपयोग करके निर्मित वस्तु की कीमतों का स्तर प्रभावित हो सकता है और इसके परिणामस्वरूप इन उत्पादों की अपेक्षित प्रतिस्पर्धा पर की कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा में कमी नहीं आएगी विशेष तौर पर यदि पाटनरोधी की वसूली को घरेलू उद्योग की हानि को दूर करने के लिए आवश्यक राशि तक सीमित किया जाता है। दूसरी ओर पाटनरोधी उपायों से पाटन प्रक्रियाओं से अर्जित अनुचित लाभ हटा जाएगा, घरेलू उद्योग में गिरावट रुक जाएगी और उपभोक्ताओं को संबद्ध वस्तुओं के व्यापक विकल्प की उपलब्धता बनाए रखने में सहायता मिलेगी।

घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत खुलासे के बाद का विवरण

81. घरेलू उद्योग द्वारा खुलासे के बाद का विवरण निम्न प्रकार है :

- क) विचारार्थ उत्पादों की परिधि, पशु, फीड की अपलिकेशन पर पूर्णतः केंद्रित है।
- ख) विचारार्थ उत्पादों के घरेलू उत्पादकों के रूप में उन उत्पादों पर विचार नहीं किया जाएगा, जो कोलिम क्लोराइड तरल की खरीद करते हैं और कोलिम क्लोराइड ड्राई पाउडर की बिक्री करते हैं।
- ग) मूल्य गिरावट जैसे मापदंड तथा उसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को मार्जिन भागीदारी में क्षति, बिक्री अवसरों की क्षति और उसके उत्पादन तथा क्षमता उपयोग, लाभ, निवेश पर लाभ तथा रोकड़ प्रवास पर पड़ा परिणामी प्रभाव दर्शाता है कि उत्पादों के पाटन के कारण घरेलू उद्योग को बहुत क्षति हुई है।
- घ) पी ओ आई में पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन सकारात्मक है तथा पर्याप्त है।
- ड) सामग्री क्षति के अतिरिक्त, मामले के तथ्य स्पष्ट रूप से सिद्ध करते हैं कि इस बात पर विचार करते हुए कि चीनी उत्पादकों द्वारा सृजित क्षमता घरेलू मांग और निर्यात अभिविन्यास की तुलना में बहुत अधिक है, दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को सामग्री क्षति का खतरा होता है।

- च) उत्पाद के विभिन्न स्वरूपों तथा उत्पाद की विभिन्न कन्सन्ट्रेशन, जो उत्पादित की जाती है तथा बिक्री की जाती है, के मद्देनजर, प्रतिपादन शुल्क के यथामूल्य स्वरूप की सिफारिश की जाती है।

अन्य विरोधी संबंधित पक्षों द्वारा खुलासे के बाद का प्रस्तुतिकरण

82. अन्य विरोधी संबंधित पक्षों द्वारा खुलासे के बाद का प्रस्तुतिकरण निम्न प्रकार है :

- क) खुलासा विवरण उन्हें देर शाम दिनांक 24 सितम्बर, 2012 को मुहैया कराया गया, जबकि डी एस पर मॉनीटरिंग की तारीख 21 सितम्बर, 2012 को।
- ख) कंपनी द्वारा किए गए वितर्क को अधिक मान्यता प्रदान नहीं की गई। हालांकि, कंपनी ने जांच के पहलुओं के संबंध में कई मुद्दे उठाए थे, लेकिन उनका खुलासा के बाद के विवरण में कोई उल्लेख नहीं है।
- ग) बालाजी अमाइन्स का याचिकाकर्ता को समर्थन एक अन्य प्रतिपादन मामले में याचिकाकर्ता का समर्थन प्राप्त करने हेतु एक सोची-समझी रणनीति थी। एक उत्पाद के संबंध में दोनों ही कंपनियां उत्पादक हैं। इसके अतिरिक्त, बालाजी अमाइन्स अच्छा लाभ अर्जित कर रहा है।
- घ) कंपनी द्वारा मांगी गई अधिकांश जानकारी सार्वजनिक फाइल में उपलब्ध नहीं थी, क्योंकि यह मामला एक अधिकारी से दूसरे अधिकारी को स्थानांतरित होता रहा, जिसके कारण सार्वजनिक फाइल नहीं बनाई गई।
- ङ) 2010-11 के बाद रुपए के मूल्य में बहुत गिरावट होने के कारण अमरीकी डालर महंगा हो गया। अतः अनुरोध है कि शुल्क का उल्लेख रुपए में किया जाए न कि अमरीकी डालर में।
- च) याचिकाकर्ता द्वारा पी यू सी की सीमा समिति करने के बाद उसमें कोलिन क्लोराइड के उन ग्रेडों तथा अपलिकेशनों को शामिल करने का दबाव बनाया जा रहा है जिन्हें याचिका में तथा निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जांच की परिधि में विशेष रूप से छोड़ दिया गया था।
- छ) इस संबंध में उल्लिखित किया जाता है कि इस संबंध में न तो कंपनी द्वारा अथवा प्राधिकारी अथवा याचिकाकर्ता द्वारा कोई जानकारी प्रस्तुत की गई थी।
- ज) ट्रांसशिपमेंट से संबंधित प्रविष्टि स्पष्ट रूप से पदों के मूल देश का उल्लेख करती है तथा अतः यह कहना कि इसे किसी प्रकार का शुल्क बचाने अथवा आंकड़ों में गड़बड़ी करने की दृष्टि से प्रयोग किया गया था, गलत होगा।
- झ) याचिका की प्रति को छोड़कर प्राधिकारी द्वारा प्राप्त अन्य किसी सूचना के अलावा याचिका अथवा जानकारी सहित किसी भी संबंधित पक्ष द्वारा कोई दायर की गई सूचना तथा याचिकाकर्ता द्वारा किए लिखित अनुरोध के संबंध में कोई भी जानकारी उत्तर पक्ष को मुहैया नहीं कराई गई।

- ज) विषयगत वस्तु के उत्पादन के संबंध में दी गई जानकारी भी याचिकाकर्ता द्वारा याचिका में दी गई जानकारी से भिन्न है।
- ट) प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई सी एन वी पद्धति भी कानूनी रूप से वैध नहीं है। तदनुसार, प्राधिकारी से उत्पादन क्षमता, मार्केट साइज, तकनीकी भिन्नता तथा उपभोक्ता पसंद, के मद्देनजर समुचित अनलॉग देश को चुनने के बाद चीन के सामान्य मूल्य निर्धारण का कोई कार्य नहीं किया गया, जो कि वैसे भी प्राधिकारी द्वारा अभी तक किया नहीं गया है।
- ठ) निर्यात मूल्य के संबंध में यह पाया गया है कि प्राधिकारी द्वारा की गई टिप्पणियां केवल भ्रामक ही नहीं हैं बल्कि आपसी रूप से एक-दूसरे के विपरीत भी हैं। पैरा 23 तथा 33 में आपसी विरोध है।
- ड) घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि सुगाना ने सामग्री को आयात किया तथा उसका स्थानीय बाजार में व्यापार किया जिसके कारण स्थानीय उद्योग को क्षति हुई, भ्रामक है तथा सुगाना की प्रतिष्ठा को क्षति पहुंचने वाला है। वास्तव में सुगाना ने जांच अवधि के दौरान विषयगत वस्तुओं की किसी मात्रा का निर्यात नहीं किया है अर्थात् वह अवधि जिसके संबंध में याचिकाकर्ता ने उसे पर्याप्त क्षति का दावा किया है।
- ढ) बालाजी तथा घरेलू उद्योग के मूल्य में बड़ी भिन्नता है, जबकि कच्ची सामग्री दोनों ही एक ही आपूर्तिकर्ता से प्राप्त करते हैं।
- ण) प्राधिकारी ने पी ओ आई के दौरान विषयगत वस्तु के उपयोग तथा मांग को पहले के 1000 मी.टन से बढ़कर 11,000 मी. टन होना नहीं पाया।
- त) घरेलू उद्योग को मात्रा की कोई क्षति नहीं हुई है।
- थ) आयात में कटौती का डी आई को कथित क्षति से कोई संबंध नहीं है।
- द) मांग की गलत संगणना, क्योंकि कैप्टिव उपभोग तथा याचिकाकर्ता के निर्यात को शामिल किया गया।
- ध) याचिकाकर्ता की मार्केट भागीदारी में गिरावट का मुख्य कारण घरेलू उत्पाद की गुणवत्ता में कमी आने के कारण हुआ है तथा अतः उपभोक्ता को आयातित उत्पाद पर निर्भर होना पड़ा।
- न) प्राधिकारी ने डी जी सी आई एल एस से प्राप्त तथा विषयगत वस्तु के चुनाव हेतु अपनाई गई जानकारी मुहैया नहीं कराई।
- न) आयात के लैंडिड मूल्य से संबंधित आंकड़े संबंधित पक्षों को किसी प्रकार की जानकारी अथवा आंकड़े प्रदान किए बिना ही बदल गए जिनके कारण ऐसा परिवर्तन आयात मूल्यों में भी करना पड़ा। मूल्यों के कथित तीव्र कटौती के बावजूद, याचिकाकर्ता ने अपने मूल्य को आयातित मर्दों के समान करने का प्रयत्न नहीं किया। विषयगत वस्तु के मूल्य में कटौती नहीं करने से याचिकाकर्ता अथवा अन्य भारतीय विनिर्माता का बिक्री मूल्य प्रभावित नहीं हुआ।
- प) प्रतिस्पर्धा की अनुपस्थिति में याचिकाकर्ता अत्यधिक लाभ लेना चाहता था तथा एक तरफा मूल्य लेकर अपने एकाधिकार का पुनःप्रयोग कर रहा था।

- फ) मूल वर्ष तथा 2008-09 में किसी भी देश से विषयवस्तु वस्तु का आयात नहीं हुआ। अतः याचिकाकर्ता की वित्तीय स्थिति को मूल वर्ष अथवा 2008-09 से तुलना करने पर यह कहा जा सकता है कि याचिकाकर्ता की वित्तीय स्थिति में सुधार हुआ तथा कथित पाटन वस्तुओं के आयात के कारण उसे किसी प्रकार की हानि नहीं हुई।
- ब) प्रत्येक तथा हरेक मामले में 22 प्रतिशत की आर ओ आई सुसंगत नहीं है।
- भ) याचिकाकर्ता ने उल्लिखित किया है कि मूल वर्ष के दौरान उसकी प्रभावी क्षमता केवल 3000 मी. टन थी। अतः प्राधिकारी के निष्कर्ष असंगत है तथा योग्यता आधारित नहीं है।
- म) यह प्रस्तुतिकरण किया गया है कि 2009-10 में विषयगत वस्तु का मूल्य कम था अर्थात् 29 रुपए /प्रति किलोग्राम, जो कि पी ओ आई में बढ़कर 34 रुपए/प्रति किलोग्राम हो गया। यदि याचिकाकर्ता के निम्न मूल्य को 2009-10 में कोई खतरा नहीं हुआ और वह लाभ प्राप्त कर सका तो पी ओ आई में विषयगत वस्तु के लैंडिड मूल्य में बढ़ोतरी के बावजूद वह कैसे प्रभावित हो गया।
- कक. बालाजी अमाइन्स का तुलन पत्र 2008 से 2011 तक सत्यापित किया जा सकता है जब उसने स्पष्ट रूप से यह दर्शाया है कि उसका लाभ प्रति वर्षवार बढ़ रहा था और बिक्री में भी सुधार हो रहा था।
- खख. सुगाना प्राधिकारी के इस निष्कर्ष से सहमत नहीं है कि घरेलू उद्योग को उत्पादन लागत की वसूली हेतु सही मूल्य समुचित लाभ तथा नहीं लेने दिया गया।
- गग. याचिकाकर्ता द्वारा क्षति का खतरा केवल असत्यापित रिपोर्टों तथा 2008-09 की रिपोर्ट को तूल देना है तथा इसका पी ओ आई तथा चालू वर्ष अथवा भविष्य से कोई लेना देना नहीं है।
- घघ. अन्य तथ्यों की परिभाषा में अन्य परिभाषाएं समाहित हैं, जिन्हें व्यापक नहीं बनाया जा सकता जैसाकि खुलासा विवरण में आकलन किया गया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

83. प्राधिकारी द्वारा सभी संबंधित पक्षों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण की जांच की गई है। प्राधिकारी ने पाया है कि अधिकांश प्रस्तुतिकरण वही हैं जिन्हें इन निष्कर्षों में उपयुक्त शीर्ष के अंतर्गत उठाया है। प्राधिकारी ने मौजूदा जांच हेतु सुसंगत सीमा तक इन प्रस्तुतिकरणों की निम्न प्रकार जांच की है :

- क) जहां तक चालू उद्योग का दावा है कि कोई प्रारंभिक निष्कर्ष अधिसूचित नहीं किया गया, प्राधिकारी ने नोट किया है कि सभी मामले में प्रारंभिक निष्कर्ष जारी करना अपेक्षित नहीं होता।
- ख) संबंधित पक्षों के अनुरोध अनुसार, प्राधिकारी ने उनकी टिप्पणी हेतु अतिरिक्त समय की गारंटी प्रदान की।

- ग) यह गलत है कि सुगाना द्वारा दिए गए वितर्कों को यथोचित सम्मान नहीं दिया गया तथा उपयुक्त रूप से संबोधित किया गया है।
- घ) जहां तक इस दावे का संबंध है कि बालाजी अमाइन्स का समर्थन एक सोची समझी रणनीति के तहत है ताकि वह याचिकाकर्ता का एक अन्य मामले में समर्थन हासिल कर सके, प्राधिकारी ने टिप्पणी की है कि यदि प्राधिकारी के लिए असंगत है। केवल याचिका का समर्थन अथवा विरोध ही सुसंगत है। चाहे जो भी हो, याचिकाकर्ता को बालाजी अमाइन्स के समर्थन के अतिरिक्त भी अन्य समर्थन प्राप्त है। यह भी नोट किया गया है कि सुगाना द्वारा ऐसा कोई उत्पाद विनिर्दिष्ट नहीं है जिसका मौजूद याचिकाकर्ता तथा बालाजी अमाइन्स उत्पादक हो तथा प्रतिपादन शुल्क लगाया गया हो।
- ङ) यह बिना आधार के है कि कंपनी द्वारा मांगी गई सूचना सार्वजनिक फाइल में उपलब्ध नहीं है अथवा इस संबंध में संबंधित अधिकारियों के परिवर्तित होने के कारण कोई प्रभाव पड़ा है। यह भी आधारहीन है कि सार्वजनिक फाइल को समुचित रूप से नहीं रखा गया।
- च) भारतीय रुपए के मूल्य में गिरावट के संबंध में प्राधिकारी को केवल उन मापदंडों पर विचार करना था जो जांच अवधि से मौजूद थे। यह भी नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग ने उल्लिखित किया है जांच अवधि के बाद इनपुट मूल्यों से वृद्धि हुई।
- छ) विचारार्थ उत्पाद की परिधि के वितर्क के संबंध में स्पष्ट किया जाता है कि विचारार्थ उत्पादों की परिधि को बढ़ाया नहीं गया है।
- ज) ट्रांसशिपमेंट के संबंध में संबंधित पक्ष के दावे के संबंध में, स्पष्ट किया जाता है कि प्राधिकारी ने डी जी सी आई एंड सी के आंकड़ों को अपनाया है तथा प्राधिकारी ने किसी प्रकार के ट्रांसशिपमेंट पर विचार नहीं किया।
- झ) याचिका में निहित क्षति आंकड़ों तथा प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए आंकड़ों के बीच अंतर के संबंध में, स्पष्ट किया जाता है कि खुलासा विवरण में निहित आंकड़े तथा मौजूदा रिस्कर्ष प्राधिकारी द्वारा की गई जांच तथा सत्यापन पर आधारित है।
- ञ) एक संबंधित पक्ष द्वारा सामान्य मूल्य निर्धारण हेतु अपनाई गई विधि के संबंध को विवादित किया है। दावा किया गया है कि प्राधिकारी द्वारा भारत को कोई सरोगेट देश नहीं माना जा सकता। प्राधिकारी ने टिप्पणी की है कि याचिकाकर्ता ने मूल्य अथवा तृतीय देश में मार्केट अर्थव्यवस्था के संबंध में कोई सकारात्मक मूल्य के संबंध में यह कहते हुए प्रदान नहीं किया है कि संगत सूचना का अभाव है। यह भी टिप्पणी की गई है कि तीसरे देश की मार्केट अर्थव्यवस्था से भारत में मूल्यों को इसलिए नहीं अपनाया जा सकता क्योंकि विचारार्थ उत्पाद का आयात बहुत कम होता है। किसी भी चीनी उत्पादक ने प्राधिकारी हेतु प्रति उत्तर प्रस्तुत नहीं किया तथा न ही किसी संबंधित पक्ष ने मार्केट अर्थव्यवस्था उपाय हेतु कोई दावा किया है। घरेलू उद्योग के सामान्य मूल्य निर्धारण के संबंध में दावे का विरोध करते हुए, संबंधित पक्ष द्वारा तृतीय देश में मार्केट अर्थव्यवस्था में मूल्य अथवा सकारात्मक मूल्य के संबंध में न तो कोई दावा प्रस्तुत किया है न ही कोई साक्ष्य उपलब्ध कराया गया है।

उपर्युक्त परिस्थितियों में, प्राधिकारी ने उपलब्ध विकल्प के अनुसार कार्रवाई की है अर्थात् "अन्य किसी सुसंगत मूल्य निर्धारण" की प्रक्रिया हेतु।

- ट) जहां तक प्रकटीकरण विवरण के पैरा 23 और 33 में स्पष्ट विरोधाभास के विवाद का प्रश्न है, उसकी समीक्षा की गई और उसमें कोई विरोधाभास नहीं पाया गया। प्रकटीकरण विवरण का पैरा 23 संबद्ध पक्षों की राय दर्शाता है जबकि पैरा 33 प्राधिकारी के प्रस्तावित अभिप्राय की चर्चा करता है।
- ठ) जहां तक सुगना द्वारा उत्पाद के आयात और बिक्री का संबंध है, हालांकि यह मुद्दा वर्तमान अभिप्राय से असंगत है, यह नोट किया गया कि घरेलू उद्योग ने साक्ष्य दिए हैं जो यह दर्शाता है कि सुगना ने उत्पाद बिक्री के लिए पेश किया।
- ड) जहां तक दो घरेलू उत्पादकों के बीच मूल्य भिन्नता का प्रश्न है, प्राधिकारी यह नोट करती है कि विभिन्न आपूर्तिकर्ताओं के मूल्यों में कुछ मूल्य भिन्नता प्रतिस्पर्धा का प्राकृतिक रूप है, जब तक कि दो पक्ष मिलीभगत में कार्य न कर रहे हों और प्रतिस्पर्धा रोधी प्रथाओं में लिप्त न हों। तथापि संबद्ध पक्षों ने कोई साक्ष्य पेश नहीं किया जो यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति इस कारण से हुई है।
- ढ) जहां तक बढ़ी हुई मांग और कोई प्रतिकूल मात्रा प्रभाव पर तर्क का प्रश्न है, यह नोट किया गया कि घरेलू उद्योग और अन्य घरेलू उत्पादकों का बाजार हिस्सा कम हुआ जबकि पिछले वर्ष की तुलना में पी ओ आई में चीन से आयात में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि हुई (इससे पूर्व कोई आयात नहीं था)। पी ओ आई में घरेलू उद्योग की मालसूची बढ़ी। यह भी नोट किया गया कि डंप किए गए आयातों के कारण घरेलू उद्योग का प्रदर्शन प्रतिकूल मूल्य प्रभाव दर्शाता है। यह स्पष्ट किया जाता है कि मांग की गणना में घरेलू उद्योग द्वारा किया गया निर्यात शामिल नहीं है। तथापि, उत्पाद के वशवर्ती उपभोग को शामिल किया गया है। हालांकि घरेलू उद्योग का वशवर्ती उपभोग काफी सार्थक नहीं है जिससे कि उसे शामिल करने या न करने से कोई महत्वपूर्ण भिन्नता आती है, यह नोट किया गया कि घरेलू उद्योग के वशवर्ती उपभोग को शामिल न करना उचित नहीं होगा। जहां तक गुणवत्ता मुद्दे के कारण बाजार हिस्सा कम होने का प्रश्न है, यह नोट किया गया कि सुगना ने एक ओर यह दावा नहीं किया कि इसने पी ओ आई तक आयात नहीं किया और वहीं दूसरी ओर यह तर्क भी दिया कि उसका घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति किए गए उत्पादों के संबंध में गुणवत्ता मुद्दा है (और इसलिए उत्पाद का आयात करना पड़ा)। यह भी नोट किया गया कि सुगना द्वारा किया गया गुणवत्ता का दावा अवास्तविक है।
- ण) जहां तक डी जी सी आई एंड एस संव्यवहार वार सूचना का प्रश्न है, यह सार्वजनिक सूचना नहीं है और सार्वजनिक फाइल में नहीं रखा जा सकता है। तथापि, प्राधिकारी ने प्रकटीकरण विवरण और वर्तमान निष्कर्ष में डी जी सी आई एंड एस आंकड़े से निकाली गई सभी संगत सूचना समुचित रूप से प्रकट किया है। यह भी स्पष्ट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने आई बी आई एस आयात आंकड़ों को अपनाया है जबकि प्राधिकारी ने डी जी सी आई एंड एस

- आंकड़ों को अपनाया है और इसलिए आयात का उतारने तक का मूल्य उस सीमा तक भिन्न हो सकता है।
- त) जहां तक इस विवाद का प्रश्न है कि घरेलू उद्योग अति लाभ कमा रहा है और अपनी प्रभावशाली स्थिति का दुरुपयोग कर रहा है तथा उसे एंटी पाटन शुल्क तक रखना चाहता है, यह नोट किया गया कि मामले के तथ्यों से यह स्थापित नहीं हुआ है कि घरेलू उद्योग पहले अति लाभ कमा रहा था।
- थ) जहां तक नियोजित पूंजी पर प्रतिफल का प्रश्न है, प्राधिकारी ने संगत प्रथा के अनुसार निवेश पर प्रतिफल की अनुमति दी है।
- द) जहां तक आधार वर्ष में प्रभावी क्षमता पर दावे का प्रश्न है, यह स्पष्ट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने यह नहीं कहा कि इसके पास केवल 3000 मिट्रिक टन की क्षमता है। घरेलू कंपनी का दावा यह है कि इसने देश में उत्पाद की मांग में कमी के कारण उपलब्ध क्षमता का उपयोग नहीं किया।
- ध) जहां तक प्रकटीकरण विवरण के पैरा 60 पर टिप्पणी का प्रश्न है, यह स्पष्ट किया जाता है कि इसमें निहित सूचना सत्यापित आंकड़ों के आधार पर हैं।
- न) जहां तक बालाजी अमाइन्स के लाभ का प्रश्न है, यह नोट किया गया कि प्राधिकारी को कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया गया कि बालाजी अमाइन्स घरेलू उद्योग के मुकाबले काफी अधिक लाभ कमा रहा है। यह नोट किया गया कि बालाजी अमाइन्स बहु उत्पाद कंपनी है और इसलिए वार्षिक रिपोर्ट में इसका लाभ विचाराधीन उत्पाद से संबंधित संचालन का प्रतिनिधित्व नहीं है।
- न) जहां तक क्षति के खतरे पर टिप्पणी का प्रश्न है, यह नोट किया गया कि अन्य संबद्ध पक्षों ने कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया जो यह साबित करता है कि घरेलू उद्योग द्वारा किए गए दावे सही नहीं हैं।

निष्कर्ष

84. उठाए गए मुद्दों तथा संबद्ध पक्षों द्वारा दी गई प्रस्तुतियों तथा प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध कराए गए तथ्यों की जांच के बाद, प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि:

- क. संबद्ध वस्तु संबद्ध देश से संबंधित सामान्य मूल्य से नीचे भारतीय बाजार में आयात जिससे संबद्ध वस्तु की पाटन हुई;
- ख. संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु का पाटन अंतर न्यूनतम से अधिक है;
- ग. घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तु के संबंध में क्षति हुई है; और
- घ. घरेलू उद्योग को क्षति संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के डंप किए गए आयात के कारण हुआ है।

सिफारिश

85. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि जांच शुरू की गई और सभी संबद्ध पक्षों को सूचित किया गया और घरेलू उद्योग, निर्यातकों, आयातकों, और अन्य संबद्ध पक्षों को अन्य बातों के साथ-साथ पाटन के पहलुओं, क्षति और कारणात्मक संबंध पर सकारात्मक सूचना उपलब्ध कराने के लिए पर्याप्त अवसर दिया गया। यह नोट किया जाता है कि विचाराधीन उत्पाद का इसके रूप-विधान और संकेन्द्रण के अनुरूप अति महत्वपूर्ण विभेदीकरण है। डंपिंग, क्षति और उसके अनौपचारिक संबंध में पाटनरोधी नियमों की दृष्टि से जांच शुरू और संचालन करने और सकारात्मक पाटन अंतर के साथ-साथ ऐसे पाटित किए गए उत्पादों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति स्थापित होने पर प्राधिकारी का यह मत है कि घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाली पाटन को समायोजित करने के लिए पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक है। इसलिए, प्राधिकारी इसे आवश्यक मानते हैं और इसमें वर्णित पद्धति और विधि के अनुसार चीन से संबद्ध वस्तु के आयात पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं।

86. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए न्यूनतर शुल्क नियम के संबंध में, प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन के न्यूनतर के बराबर पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग की क्षति को दूर किया जा सके। तदनुसार प्राधिकारी कालम (4) की समनुरूपी प्रविष्टि में विनिर्धारित देश के मूल के और कालम (5) की समनुरूपी प्रविष्टि में विनिर्धारित देश से निर्यातित और कालम (6) की समनुरूपी प्रविष्टि में विनिर्धारित उत्पादक द्वारा उत्पादित तथा कालम (7) की समनुरूपी प्रविष्टि में विनिर्धारित निर्यातक द्वारा निर्यातित और भारत में, उक्त तालिका के कालम (8) की समनुरूपी प्रविष्टि में यथाविनिर्धारित संबद्ध वस्तु के आयातों के सी आई एफ मूल्य के प्रतिशत के रूप में निर्धारित दर पर, आयातित संबद्ध वस्तु पर निम्नलिखित सारणी के कालम (3) में यथाविनिर्धारित विवरण के अनुसार यथा मूल्य रूप में पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने की सिफारिश करते हैं।

सारणी

क्र. सं.	उप शीर्षक	वस्तु का विवरण	उदगम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	सी आई एफ मूल्य पर शुल्क की दर
1	2	3	4	5	6	7	8
1	2923 या 2309	पशु खाद्य अनुप्रयोग के लिए सभी	चीन	चीन	कोई भी	कोई भी	60.79%

		प्रकार और सांद्रता के कोलीन क्लोराइड					
2	तदैव	तदैव	चीन	चीन के अलावा कोई भी देश	कोई भी	कोई भी	60.79%
3	तदैव	तदैव	चीन जन गण के अलावा कोई भी अन्य देश	चीन	कोई भी	कोई भी	60.79%

टिप्पणी:

1. यह स्पष्ट किया जाता है कि केवल वर्तमान निष्कर्षों व उपर्युक्त कालम 3 में यथा विनिर्दिष्ट विचाराधीन वस्तु से संबंधित पैराग्राफ में यथा उल्लिखित विचाराधीन वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जाएगा।
2. इस अधिसूचना के प्रयोजनार्थ, "सी आई एक मूल्य" का अर्थ सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) की धारा 14 के तहत यथा निर्धारित आकलनयोग्य मूल्य है।
87. केन्द्र सरकार के आदेश के खिलाफ अपील सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसरण में सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर अपीलीय अधिकरण को किया जा सकता है।

विजयलक्ष्मी जोशी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 4th October, 2012

(Final Findings)**Subject: -Final Findings in the Anti Dumping Duty Investigation concerning imports of Choline Chloride, originating in or exported from China PR.**

No. 14/19/2011-DGAD.—Having regard to Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules thereof, as amended from time to time (hereinafter referred to as the AD Rules):

A. BACKGROUND OF THE CASE:

1. The background of the case is as follows:

- a. Whereas M/s Jubilant Life Sciences Ltd., Noida (hereinafter referred to as the petitioner and/or domestic industry) filed an application before the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) for initiation of anti-dumping investigation concerning imports of Choline Chloride (hereinafter also referred to as the subject goods) originating in or exported from China PR (hereinafter also referred to as the subject country) and requested for levy of anti-dumping duties on the subject goods.
- b. Whereas the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner's domestic industry issued a public notice dated 25th October, 2011, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject country, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the anti-dumping duty in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995, thereof.

B. PROCEDURE

2. The procedure described below has been followed:
 - a. The Designated Authority under the above Rules, received a written application from M/s Jubilant Life Sciences Ltd., Noida as domestic industry for the product, alleging dumping of Choline Chloride originating in or exported from China PR. M/s Balaji Amines Ltd supported the application.

- b. The Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner to justify initiation of the investigation, decided to initiate the investigation against imports of the subject goods from the subject country.
- c. The Authority notified the Embassy of the subject country in India about the receipt of the petition before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-Rule 5(5) of the AD Rules.
- d. The Authority issued a public notice dated 25th October 2011 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods.
- e. The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters (whose details were made available by the Applicant) and industry associations and gave them opportunity to make their views known in writing in accordance with the Rule 6(2) of the AD Rules.
- f. The Authority also forwarded a copy of the public notice to all the known importers of the subject goods in India and advised them to make their views in writing within forty days from the date of the letter.
- g. The Authority provided a copy of the non-confidential version of application to the known exporters and the Embassy of the subject country in India in accordance with Rule 6(3) of the AD Rules. A copy of the Application was also provided to other interested parties, wherever requested.
- h. The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporters in the subject country in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

S.N.	Name of Exporter
1	NB Group Co., Ltd, (Formerly Shandong NB Group Co), 4-16F China Merchants Plaza, 70 Dong Guan Zheng Street, Xian 710048, China
2	Nantong Qihai Chemicals Co., Ltd, 21, Yongxing International Nantong, Jiangsu, China
3	Be-Long (North) Corporation, Zhongjie Youyi Farm, Huanghua County, Hebei Province, China
4	Zouping Jujia Choline Industrial Co., Ltd., Handian Industrial Zone, Zouping County, Shandong, China
5	Shandong Belong Choline Industrial Corp., Ltd., Handian Industrial Zone, Zouping, Binzhou, Shandong, China
6	Hebei Global Fodder Additive Co., Ltd., Zhangzhongzi Industry Park, Cangzhou, Hebei, China
7	Sinochem Jiangsu Co. Ltd., Floors 21&22, Jin Cheng Tower, No. 216 Middle Longpan Road, Nanjing 210002, China

- i. In response to the initiation notification, none of the exporters / producers from China PR responded to the Authority.

- j. Questionnaires were sent to the following known importers / users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

1	Provimi Animal Nutrition (I) Pvt Ltd, IS-40, KHB Industrial Area, Yelahanka New Town, Bangalore - 560 106, Karnataka, India
2	ChokhaniPharma Vet, 3rd Floor, 16 / 3, NadirshahSukhia Street, Banu Mansion, Fort Mumbai
3	Kavi Agencies, 25, Siddhi Colony, 1st Cross, Jayachama Raja Road, Bangalore, 560002
4	Shanthi Poultry Farms Pvt Ltd, 6/15, Main Road Pappampatti, Ondipudur, Coimbatore-641016 Tamilnadu
5	Vetline, 1-B, VikasRekha Complex, Khatwala Tank, Near Tower Square, Indore - 452001, Madhya Pradesh
6	VarshaMultitech, 8, 40 Street Road, 1st Stage 2 Phase, Manjunatha Nagar, Bengaluru, Karnataka 560010

- k. In response to the initiation notification, the following importers/users responded.

S.N.	Name of Respondent	Status
1	Provimi Animal Nutrition (I) Pvt Ltd	Importer
2	VarshaMultitech	Importer
3	Suguna Poultry Farm Limited	Importer

- l. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties. During the investigation proceedings, exporters, importers/users associations as well as the domestic industry submitted information pertinent to the investigations and submissions made by all interested parties have been taken into account in present Disclosure Statement.
- m. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non confidential version of the information filed on confidential basis.
- n. The non-injurious price based on the cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) has

- been worked out so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry.
- o. Investigation was carried out for the period of investigation (POI) starting from 1st April 2010 to 31st March 2011. The examination of trends, in the context of injury analysis, covered the period from 2007-08, 2008-09, 2009-10 and the POI.
 - p. The Authority held an Oral Hearing on 13th August, 2012 with all interested parties to hear the arguments. The interested parties were asked to submit their oral arguments presented in the oral hearing in the form of written submissions. The interested parties were also given opportunity to submit rejoinder to the written submissions. All such submissions in writing were considered by the Authority to the extent found relevant to the investigation.
 - q. A Disclosure Statement containing the essential facts under consideration of the Designated Authority which would form the basis for its recommendations in the Final Findings in the above mentioned investigation was issued on 24th September, 2012. Comments of all the interested parties on the Disclosure Statement to the extent found relevant to this investigation have been examined in the Final Findings.
 - r. ***in this Final Findings Notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the AD Rules.
 - s. Exchange rate for conversion of US\$ to Rs. is considered for the POI as Rs.46.18 as per customs data.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

3. The product under consideration in the present investigation is Choline Chloride of all forms and concentrations used for animal feed. Choline Chloride is a quaternary ammonium salt which is colourless, viscid and strongly alkaline. It is used as additive in animal feed. The product is classified under Customs Sub-heading 2309.9010 and 2923.1000 of the Customs Tariff Act, 1975. The classification is, however, indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation and proposed measures.

Views of interested parties

4. The interested parties have made following submissions with regard to product under consideration, like article and imports of the product
 - a. M/s Suguna Poultry Farm Limited has claimed that certain entries are shown as 'suspicious entries' in the application by the domestic industry. Methodology adopted for arriving at the import statistics is not clear. The company has also stated that there is no proof of trans-shipment of subject goods from Netherlands has been provided by the domestic industry. The company further stated that it is not clarified whether production, sales volume and net sales realization are for what level of concentration of the product.
 - b. M/s. Provimi responded to the notice of initiation and requested for personal hearing. The company however did not attend the oral hearing conducted by the Authority.

- c. M/s. VarshaMultitech submitted that anti dumping duty should not be levied on imports of Choline Chloride in the interest of Indian poultry farmers and industry. The company further claimed that the petitioner wields a virtual monopolistic position in India. VarshaMultitech claimed that the petitioner is exporting nearly 1500 tons leaving about 8500 tons for sale in the Indian market. The company has also stated that there is a shortfall in demand of the product in the country as compared to supply conditions. There will be a severe shortage and crisis for Indian poultry if imports are denied or restricted by anti dumping duty.
- d. The petitioner had attempted to extend the scope of the investigation and cover Choline Chloride (all grades and application including Food and Pharma) under the cover of anti dumping duty.
- e. The Petitioner has himself restricted the scope of product to animal feed/grade application only in the petition and hence cannot seek to enlarge the scope of the product now, especially since users of other grades are not party to the investigation.
- f. Each grade and application of Choline Chloride has different specifications and hence, the claim of petitioner that production of 100% concentration of choline chloride can be used for food and pharma applications also is wrong.
- g. MOF has clarified that Choline Chloride used as animal feed grade is to be classified only under Chapter 23 and thus HS code of the product should be restricted to this chapter only.

Views of the Domestic Industry

5. The following are the views of the domestic industry:
 - a) Choline Chloride is a quaternary ammonium salt, which is colorless, viscid and strongly alkaline. It is used as an additive in animal feed. The purified Choline Chloride is deposited on a carrier and then dried. The carriers normally used are Silica, Corn Cob Powder or similar absorbent powder derived from agro- waste materials. The carrier is used merely to carry the product – Choline Chloride. The commercial nomenclature of the product depends upon the carrier used and the percentage of Choline Chloride in the compound.
 - b) Choline Chloride is basically used as poultry feed supplement.
 - c) Present petition and proposed measures concerns all forms and types of Choline Chloride for animal feed applications. Only choline chloride for pharma or food application may be exempted from the scope of the product under consideration, after giving adequate reasons for the same. However, choline chloride pharma or food grade for animal application is within the scope of the product under consideration.
 - d) The petitioner found some import transactions, wherein it appeared that it could be a duplicate entry and hence, marked as 'suspicious'. As a conservative estimate, the petitioner has ignored these import entries in determining total volume of imports.
 - e) The production reported is on 60% basis. Since feed grade is supplied on 60% basis and further since feed grade is majority of the production and sales, petitioner has presented entire information on 60% basis. Wherever information pertains to 75%, the same has been converted into 60% in order to ensure uniformity in data.

- f) Under Rule 6, the Designated Authority is required to provide opportunity to the interested parties to present information orally during the course of the investigations and not before proceeding further with preliminary findings in the matter. The hearing is normally granted by the Authority after the preliminary findings and before concluding the investigations.
- g) Transshipment - Significant imports of the product have been made by Provimi Animal Nutrition India Private Limited. The company has since responded to the Designated Authority. The information provided by this company would clearly establish the correct facts in this regard.
- h) VarshaMultitech is admittedly an importer, consumer and trader of Choline Chloride.
- i) Imports of Choline Chloride from China were earlier subjected to anti dumping duty. The dumped imports have recommenced after the lapse of the anti dumping duty and imports are in significant volumes.

Examination by the Authority

6. The product under consideration in the present investigation is Choline Chloride of all forms and concentrations for animal feed application. Petitioner contended that choline chloride of all forms and concentrations are to be considered in the scope of the product under consideration. Choline Chloride is a quaternary ammonium salt, which is colorless, viscid and strongly alkaline. It is used as an additive in animal feed. The purified Choline Chloride is deposited on a carrier and then dried. The carriers normally used are Silica, Corn Cob Powder or similar absorbent powder derived from agro- waste materials. The carrier is used merely to carry the product – Choline Chloride. The commercial nomenclature of the product depends upon the carrier used and the percentage of Choline Chloride in the compound. For example, if the product has minimum 70% of Choline Chloride, and the carrier is Corn Cob, then it is called Choline Chloride 70% Corn Cob. If the carrier is Silica, and minimum percentage of Choline Chloride in the product is 50%, then it is called Choline Chloride 50% Silica. The petitioner clarified that the present investigation is for all types and forms of Choline Chloride and, for the sake of convenience in comparison, all volumes have been converted to Choline Chloride 60% as majority of imports entering Indian ports are of Choline Chloride 60% Corn Cob. Choline Chloride is basically used as poultry feed supplement. Petitioner contended that use of Choline Chloride was limited in India due to lack of awareness in the country and the petitioner made dedicated efforts to increase the awareness of the product in the market, which resulted in significant increase in the demand of the product in the country.
7. The Authority notes that Choline Chloride has three broad applications - animal feed applications, which includes aqua feed, poultry feed, dairy feed or any other animal feed; pharma applications and food (human) applications. Further, it can be produced in various types/forms. Petitioner identified the following typical types/forms of the product:
 - a) Choline Chloride on Corn Cob Carrier
 - b) Choline Chloride on Silica Carrier
 - c) Choline Chloride in water (Aqueous Solution)
8. The product can be in liquid form or dry powder form. The product is supplied in different concentrations, percentage of which in a particular product type/form may vary. However, as per the DGCI&S data, the imports during 2009-10 and

2010-11 are of Choline Chloride 60% Corn Cob from subject country. The petitioner contended that the domestic industry and Chinese producers produce Choline chloride in crystal form as well, which can be converted into liquid and thereafter, used for feed application. Petitioner further contended that different forms of choline chloride are nothing but the same product with difference in percentage of Choline chloride, difference in carrier or difference in physical form.

9. The Petitioner claimed that there is no known significant difference in the subject goods produced by the Indian industry and the subject goods exported from the subject country. The subject goods produced by the Indian industry and imported from the subject country are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.
10. The subject goods fall under Tariff codes '2309.9010' and '2923.1000' of the Customs Tariff. However, there have been imports of the subject goods under other headings 23099020 and 23099090 as well. Customs classifications are indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation and proposed measures. It is noted that either of the customs classification is not dedicated for the product under consideration. The classification under 2309.9010 is for "animal compound feed". Choline chloride is only one of the kinds of animal compound feed. It is noted that one of the interested parties has relied upon the DGCI&S published statistics in support of their contentions with regard to volume of imports of the product under consideration. It is, however, clarified that all kinds of animal compound feed are not within the scope of the product under consideration and, therefore, information published by the DGCI&S for all kinds of animal compound feed is not relevant for the present purposes. With regard to correct customs classification of the product and circular issued by the Ministry of Finance, it is noted that the product description is dispositive for the present purpose. The customs classification is not binding on the scope of the present investigations or proposed measures. It is however, clarified that any product other than product under consideration falling under the customs classification has not been considered for the present investigation.
11. Provimi Animal Nutrition India Private Limited filed response to importer's questionnaire and has provided supporting evidence. The information provided by the company was examined by the Authority. It is noted that the company has imported significant volumes of the goods, which have been invoiced by Provimi B. V., Netherlands. The country of origin in these goods is China. It, thus, appears that the import transactions reported as "Netherlands" in the import data relied upon by the petitioner pertains to these imports which are in fact of Chinese origin. In any case, the Authority has now received information from DGCI&S as well, which has also been examined and relied upon for the present determination.
12. The Authority has examined the submissions made by various interested parties with regard to scope of the product under consideration. The Authority notes that there is no known difference in subject goods produced by the domestic industry and exported from the subject country. The subject goods produced by the domestic industry and that imported from subject country are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two

interchangeably. The Authority holds that Choline Chloride for animal feed applications falling under Tariff codes 23099010, 29231000, 23099020 and 23099090 of the Customs Tariff Act is within the scope of the product under consideration but Customs classifications are indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation and proposed measures. Though all the imports have been in the 60% category but keeping in view the fact that percentage concentration can easily be changed after importation as no substantial technological refinement is involved in changing the concentration and also considering circumvention, the Authority holds that Choline Chloride of all concentrations for animal feed applications is within the scope of the product under consideration.

13. The Authority also holds that the subject goods produced by the applicant are being treated as domestic like article to the product under consideration imported from the subject country in accordance with the anti-dumping Rules.

D. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY AND STANDING

Views of the Domestic Industry

14. M/s Jubilant Life Sciences Ltd. is the applicant in the present case who constitutes domestic industry within the meaning of the Rules. There are some more producers of Choline Chloride in India. However, all these producers are not producing liquid Choline Chloride. They are purchasing liquid Choline Chloride and processing it to make dry Choline Chloride. Their input and output both are, thus, the product under consideration. The processing activity by these producers does not tantamount to production. Further, their production is already included in the production of Choline Chloride. Only those producers who are producing liquid Choline Chloride may be considered as domestic producer to avoid dual accounting. Those parties who are buying Choline Chloride liquid and selling Choline Chloride dry powder cannot be considered as the domestic producer of the product under consideration. For them, the raw material as well as the finished product is the product under consideration. A producer can be considered a domestic producer for the present purpose only if his input is not product under consideration and output is product under consideration. If the input of a producer is one form of the product under consideration and output is another form of product under consideration, the company cannot be considered domestic producer for the present purpose. Following table shows names of producers producing from the basic stage and liquid stage: -

Liquid choline chloride producers	Processors of Liquid Stage
Jubilant (applicant)	Sanjay Chemicals
Balaji Amines (supporter)	Rawat Chemicals
DA Sons	Supreme Chemicals

15. The production of the petitioner constitutes a major proportion in Indian production. The same is significantly more than 50% of the Indian production. The application, thus, satisfies the requirements of Rule 2(b) and Rule 5(3)(a) and (b) of the AD Rules.

Views of interested parties

16. It has been contended by M/s. Suguna that information provided by Balaji Amines has not been made available to them.

Examination by the Authority

17. Rule 2 (b) of the AD rules defines domestic industry as under:

"(b) 'domestic industry' means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'domestic industry' may be construed as referring to the rest of the producers"

18. It is noted that the application was filed by M/s Jubilant Life Sciences Ltd., Noida as domestic industry. The production of the applicant accounts for a major proportion of the total domestic production of the like article and is significantly more than 50% of total Indian production. Further, M/s Balaji Amines Ltd. has supported the application. The company has, however, not provided information relevant to injury determination and, therefore, the company could not be included for injury examination. It is noted that those parties who are buying Choline Chloride liquid and selling Choline Chloride dry powder cannot be considered as the domestic producer of the product under consideration. None of the interested parties has raised any issues with regard to standing and domestic industry status of the applicant. As regards the contention of M/s. Suguna that a copy of the letter written by Balaji Amines has not been provided to them, it is noted that a copy of the letter written by Balaji Amines has been placed in public file, which was open for inspection by any interested party on request. In view of the above and after examination, it is held that the applicant satisfies the requirements of Rule 2(b) and Rule 5(3) of the AD Rules.
19. Based on information on record, it is determined that the production of the applicant constitutes a major proportion in the Indian production. Further, production of the applicant with supporter constitutes significantly beyond a major proportion of Indian production.

Unit in MT

Particular	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Jubilant (applicant)	5,052	4,502	7,576	8,152
Balaji Amines (supporter)	1,767	1,736	1,458	1,865
Other Indian producers	-	-	300	267
Indian production	6,819	6,238	9,334	10,284

Share of applicant alone	74%	72%	81%	79%
Share of applicant with supporter	100%	100%	97%	97%

20. In view of the above, the Authority determines that the applicant has the standing to file and maintain the present petition. Further, the applicant constitutes domestic industry within the meaning of the Rules.

E. ASSESSMENT OF DUMPING – METHODOLOGY AND PARAMETERS

Normal Value

21. Under section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:

(i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article, when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6), or

(ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:

(a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

(b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

Views of the Domestic Industry

22. The following are the views of the domestic industry:

- i) China should be treated as a non-market economy country. Normal value in case of China should be determined in accordance with para-7 Annexure-I to the Rules.
- ii) None of the exporters has responded to the Designated Authority nor have they provided any evidence to establish that prices of basic inputs substantially reflect market values. The exporters should be treated as non cooperative and non market economy on the above grounds.
- iii) There are a number of conditions specified under the law before a Chinese company can be granted MET. Failure to satisfy even one of the conditions mentioned under the rules by the responding Chinese exporters is sufficient to hold that market economy status cannot be granted to responding Chinese companies and thus the normal value should be determined in accordance with Para-7 of the Rules.

- iv) Chinese producers are not entitled for market economy treatment because of significant state control.

Views of other interested parties

23. The following are the views of the other interested parties:

- i) Though none of the producers/exporters from China has filed any claim for market economy treatment but non filing of response by exporters is because India is not a huge market for Chinese exporters and does not mean admission of dumping.
- ii) There being a huge difference in level of technology, market size, etc between India and China, it is inappropriate to use costs of petitioner for calculation of Normal Value. The Designated Authority, thus, should choose an appropriate analogous country.

MET examination and normal value for all producers and exporters from China

24. The Authority notes that in the past three years, China PR has been treated as a non-market economy country in the anti-dumping investigations by other WTO Members. Therefore, in terms of Para 8 (2) of the annexure 1 of AD Rules, China PR has been treated as a non-market economy country subject to rebuttal of the above presumption by the exporting country or individual exporters in terms of the above Rules for the purposes of preliminary determination.
25. As per Paragraph 8 of the Annexure I to the Anti Dumping Rules as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted if the exporter(s) from China PR provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and establish to the contrary. The cooperating exporters/producers of the subject goods from China are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-
- a. The decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labor, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
 - b. The production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
 - c. Such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms; and
 - d. The exchange rate conversions are carried out at the market rate.
26. The Authority notes that none of the producers/exporters of the subject goods from China PR has submitted their questionnaire responses to the Designated Authority nor claimed market economy treatment. In view of non-cooperation from the Chinese producers/exporters, the normal value is proposed to be determined in accordance with Para-7 of Annexure-I to the Rules.

Determination of Normal Value for all producers and exporters from China PR

27. In view of non-cooperation from the Chinese producers/exporters, the Authority is not in a position to apply Para 8 of Annexure 1 to the Rules and has to proceed in accordance with Para 7 of Annexure- I to the Rules. According to these Rules, the normal value in China can be determined on any of the following basis:
- a. On the basis of the price in a market economy third country, or
 - b. The constructed value in a market economy third country, or
 - c. The price from such a third country to other countries, including India.
 - d. If the normal value cannot be determined on the basis of the alternatives mentioned above, the Designated Authority may determine the normal value on any other reasonable basis including the price actually paid or payable in India for the like product duly adjusted to include reasonable profit margin.
28. The Authority notes that none of the interested parties, including applicant and responding importer/consumers, have provided any information for determination of normal value on the basis of cost or price in market economy third country. The applicant submitted that for determination of normal value based on third country cost and prices, complete and exhaustive data on domestic sales or third country export sales, as well as cost of production and cooperation of such producers in third country is required. Since no authentic information with regard prices and costs prevalent in these markets is available, normal value cannot be determined on the basis of cost or price in market economy third country. None of the Chinese producers and/or exporters has made any claim with regard to an appropriate market economy third country. The responding importer/consumer disputed consideration of normal value based on cost structures of the domestic industry on the plea that there being a huge difference in level of technology, market size, etc between India and China. The submissions made by importer/consumer were examined in detail. It is noted that no verifiable evidence has been provided by the responding importers/consumers to substantiate their argument that the level of technology or market size is so different as to render the proposed determination of normal value inappropriate. It is also noted that normal value on the basis of cost of production in China can be considered only if conditions specified under Para-8 of Annexure-I are met. No claim for market economy treatment has, however, been made by any Chinese producer/exporter. The Authority has, therefore, determined normal value on the basis of facts available, considering the estimates of cost of production in India and reasonable addition for profits. Normal Value in China has, therefore, been determined on the basis of cost of production in India, duly adjusted for selling, administrative and general expenses and profit. The normal value proposed to be determined is mentioned in the Dumping Margin Table below.

Export Price

29. Export price has been determined considering volume and value of imports for the period of investigation as per transaction-wise import data procured from DGCI&S.
30. It is noted that the applicant had determined export price on the basis of International Business Information Service, (IBIS). The Authority, however, called information from the DGCI&S. Comparison of this information with the IBIS information provided by the applicant showed that DGCI&S data appropriately reflects the volume and value of imports.

31. It is noted that the responding importers/consumers made submissions with regard to volume and value of imports of the product. It is, however, noted that the importers/consumers have relied upon the published DGCI&S information. In this regard, the Authority notes that since the product under consideration does not have dedicated customs classification and further since imports of other products are also included in the customs classification relied upon by the consumers (this fact becomes evident from the DGCI&S transaction wise data received from the DGCI&S), it would not be inappropriate to determine export price on the basis of transaction wise DGCI&S data procured from DGCI&S by the Authority.
32. The prices so determined are CIF prices. According to WTO Agreement on Anti-Dumping and Indian Anti-Dumping Rules, comparison of normal value and export price should be done at the same level, preferably at ex-factory level. The export price is, therefore, required to be adjusted for ocean freight, marine insurance, commission, inland transportation, port expenses and bank charges, which the exporter should have incurred for exporting the goods to India.
33. None of the exporters from China has cooperated with the Authority. The applicant has claimed various adjustments based on its market information and the same have been considered for determining net export price. The Net Export Price proposed to be determined is mentioned in the Dumping Margin Table below. Dumping margin has been determined as the difference between the normal value and net export price as determined above. It is seen that dumping margin is not only above de-minimis level but also substantial and significant.

Particulars	POI (USD per Kg).
Constructed Normal Value	***
Net export price	***
Dumping margin	***
Dumping margin	***
Dumping margin	80% - 90%

F. ASSESSMENT OF INJURY AND EXAMINATION OF CAUSAL LINK

Views of the Domestic Industry

34. The domestic industry has submitted as under: -
- Suguna has imported the product under consideration and traded the same in Indian market, which has caused injury to the domestic industry.
 - Imports from the subject country have increased substantially in absolute terms in a very short time span.
 - Imports have increased not only in absolute terms but also in relation to production and consumption in India. Imports of the product increased further

after the period of investigation both in absolute terms and in relation to production and consumption in India.

- d. Imports from the subject country are undercutting the prices of domestic industry to a significant extent. The price undercutting is in spite of low prices already offered by the domestic industry.
- e. Even though the production, sales and capacity utilization of the domestic industry improved, the market share of the domestic industry declined.
- f. Performance of the domestic industry with regard to profits, return on investment and cash profits was improving till 2009-10 and deteriorated in POI.
- g. The inventories with the domestic industry were declining till 2009-10 and increased once again in POI.
- h. Employment, wages and productivity have improved.
- i. Dumping margin as a measure of extent of dumping is quite significant.
- j. All the parameters, collectively and cumulatively, establish that the domestic industry has suffered material injury. In addition to material injury, facts of the case clearly establish that the domestic industry is threatened with material injury by the dumped imports.

Views of the Exporters, Importers and Other Interested Parties

35. The other interested parties have raised following issues with regard to injury and causal link:

- i. M/s. Varsha Multitech submitted that anti-dumping duty should not be levied on imports of Choline Chloride in the interest of Indian poultry farmers and industry. The company further claimed that the petitioner wields a virtual monopolistic position in India. Varsha Multitech claimed that the petitioner is exporting nearly 1500 tons leaving about 8500 tons for sale in the Indian market. The company has also stated that there is a shortfall in demand of the product in the country as compared to supply conditions. There will be a severe shortage and crisis for Indian poultry if imports are denied or restricted by anti-dumping duty.
- ii. Import figure of 969 MT in the POI is incorrect. There is total import of 8,622 MT of all grades of Choline Chloride in India out of which 1,467 MT is from China and 7,155 MT from other countries. Import data provided by the applicant needs to be re-looked and compared with DGCI&S data.
- iii. Petitioner is a dominant producer and has abused its dominant position by charging high prices. There has been an arbitrary increase in prices by the applicant.
- iv. The applicant is trying to cartelize the Indian market and has even asked other Indian producers to increase their prices to arbitrary levels.
- v. The goods referred to by Petitioner, whether of Netherland origin or Chinese origin are not relevant as the same is for previous year and not the POI.
- vi. With respect to market share, there exist inconsistencies in figures provided in Petition and Written submissions. Also market share of petitioner as per written submissions has increased contrary to their claim.
- vii. Injury parameters such as production, sales, capacity utilization are showing increasing trends and inventories have declined.
- viii. Profits and cash profits of petitioner have increased significantly during POI and hence there exists no injury.
- ix. There exists no causal link as profitability of domestic industry has reduced despite the fact that undercutting has remained in same range for both years.

- Also landed price of imports have increased while selling price of domestic industry has decreased.
- x. Injury, if any, suffered by the applicant is on account of decline in export sales and captive consumption.
 - xi. The domestic industry has lost its market share while other producers' share in the domestic market has increased. Further, demand in India is more than supply which is reflected by the increase in production and sales of the applicant.
 - xii. The applicant has claimed injury on account of price underselling and decline in profits. Other Indian producers, despite having smaller scale of operations are not only able to sell at a price lower than the applicant but are earning profits on it too.
 - xiii. The domestic suppliers inability to supply/cater to the need as per consumer's requirement in time to feed units in different places in India is causing difficulty as there is no alternative product available in place of Choline Chloride.
 - xiv. Indian users are forced to import subject goods due to inconsistency in quality and uninterrupted supply of goods of Indian Manufacturers.
 - xv. The inconsistencies in supply time and quality have caused loss of productivity, shutdowns and financial losses to the consumers.
 - xvi. The applicant is rationing its supplies for getting better prices and derives undue advantage.
 - xvii. No threat of injury – Despite demand of 11,000 to 12,000 MT, total imports from China were hardly 969 MT, which shows that the major portion of demand and market share is still dominated by the applicant and other Indian producers. Further, mere report of some consulting company cannot be treated as evidence for production figures in China.
 - xviii. Threat of injury projected by petitioner is based on reports of year 2008-09 which is not relevant to POI or current year and the authenticity of these reports are not verifiable.
 - xix. Fresh import data not available in public file. In any case, post POI data is irrelevant for present purposes. Further annualizing of 4 month import data is fallacious as import does not continue in the same manner as production. Also, only import figures without corresponding production data, sales data, etc do not serve any purpose.

Examination by the Authority

36. The Authority has taken note of submissions made by the interested parties on injury and causal link and addressed the same at relevant places in the present Disclosure Statement.
37. With regard to the contention of the consumer that import figure of 969 MT in the POI is incorrect and that there is total import of 8,622 MT of all grades of Choline Chloride in India out of which 1,467 MT is from China and 7,155 MT from other countries, the Authority examined the import statistics and noted that the importer has relied upon published information provided by DGCI&S under the customs classifications 23099010 (Compounded Animal Feed). It is seen that the description "compounded animal feed" is not specifically for Choline Chloride. The Authority called transaction-wise import information from DGCI&S. Analysis of the import data shows that the same includes imports of products not included in the scope of the present investigations. Therefore, it would be inappropriate to consider volume of imports as per the DGCI&S published data which is not transaction wise data. Since the actual transaction wise import data with product description has become available, the same has been relied upon for the present determination.

38. The Authority notes that the responding consumer has not provided any evidence in support of its allegations with regard to rationing of the product by the domestic industry, cartelization, arbitrary price increases by the domestic industry, demand-supply gap in the Country, inconsistencies in supply by the domestic industry or quality of the domestic industry product leading to loss of productivity, shutdowns and financial losses to the consumers. The domestic industry has refuted these allegations of the consumer.
39. Annexure II of AD Rules provides for objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in domestic market for the like articles; and (b) the consequent impact on domestic producers of such products. While examining the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to price effect of dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increase which would have otherwise occurred to a significant degree.
40. As regards the impact of dumped imports on the domestic industry, Para (iv) of Annexure-II of AD Rules states as under:
- "The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."*
41. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and arguments of the interested parties.

Volume effect

a. Assessment of demand

42. For the purpose of assessment of the domestic consumption/demand of the subject goods, the sales volume of the Indian producers have been added to the total imports into India, which has been summarized in table below. It is seen that the demand for the product under consideration has increased by 81 index points between the base year and the POI.

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Sales of domestic industry including captive consumption	MT	4,506	4,962	7,471	8,094
Sales of other Indian Producers	MT	1,582	2,211	1,733	2,004

Imports from China	MT	0	0	393	971
Imports from other Countries	MT	49	17	0	32
Total Demand/consumption	MT	6,137	7,290	9,597	11,101
Trend	Indexed	100	119	156	181

Note: Figures given in the above Table is based on Choline chloride of 60% concentration

43. The interested parties have argued that the Indian producers cannot meet the demand for the product in the country. It is however noted that the petitioner itself has capacity of 9000 MT. Further, information given by M/s Balaji Amines shows that the maximum production achieved by the company was 1865 MT on equivalent basis. Further, there is another domestic producer in India. The Authority therefore holds that the domestic producers have adequate capacity to cater to the demand in POI.

b. Import volumes and market share

44. While examining the volume of the dumped imports, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India. Annexure II (ii) of the anti-dumping rules provides as under:

"While examining the volume of dumped imports the said authority shall consider whether there has been significant increase in the dumped imports either in absolute terms or relative in production or consumption in India"

45. The applicant has claimed that subject goods are being imported in a number of customs classifications. Transaction wise imports information was called from DGCI&S, analysis and comparison of which with IBIS shows that it would be appropriate to adopt Transaction wise imports data of DGCI&S for the purpose of the present investigation.

46. It is seen that the volume of dumped imports has increased significantly in POI in absolute terms and relative to production and consumption as is evident in the following table:

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Sales of domestic industry including captive	MT	4,506	4,962	7,471	8,094
Sales of other Indian Producers	MT	1,582	2,311	1,733	2,004
Imports from China	MT	0	0	393	971
Imports from other Countries	MT	49	17	0	32
Total Demand/consumption	MT	6,137	7,290	9,597	11,101
Trend	Indexed	100	119	156	181
Imports as % in relation to					
Total imports	%	-	-	100	97

Demand	%	-	-	4.23	8.96
Total production	%	-	-	4.21	9.44
Market Share In demand					
Domestic industry including captive consumption	%	73.43	68.07	77.85	72.92
Other Indian Producers	%	25.77	31.69	18.06	18.05
China	%	-	-	4.09	8.74
Third Countries	%	0.80	0.24	-	0.29

47. It is seen from the above table that:

- Imports were non-existent in 2007-08 and 2008-09. However, significant volumes of imports were reported from the subject country in 2009-10, volume of which increased further significantly in the POI.
- Imports were significant in relation to total imports, and increased significantly in relation to production and consumption in India.
- The market share of the domestic industry has declined in 2008-09 from base year, increased in 2009-10 and then declined in the POI. At the same time, imports from the subject country which were non-existent in 2007-08 and 2008-09 have increased from 4.09% in 2009-10 to 8.74% in POI.

Price effect of imports

48. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

a. Price undercutting

49. In order to determine the extent of price undercutting, the Authority has compared the net sales realization of the domestic industry with the landed value of the imports. The net sales realization was arrived at after deducting all rebates and taxes. It is seen that the landed price of imports of the subject goods are significantly below the selling prices of the domestic industry, resulting in significant price undercutting.

Particulars	Unit	2009-10	POI
Import Volume - China	MT	393	971

Import Values - China	Rs. in Lacs	123.14	302.65
Assessable Value	Rs./Kg	31.34	31.19
CIF Import Price - China	Rs./Kg	31.03	30.87
Landed price of imports	Rs./Kg	33.76	33.59
Net Selling Price	Rs./Kg	***	***
Price Undercutting	Rs./Kg	***	***
Price Undercutting	%	***	***
Price Undercutting	Range %	30-40	30-40

b. Price suppression and depression

50. The cost and price movement of the domestic industry and the landed value of imports from China have been compared over the injury period to examine whether the effect of dumped imports is to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree.

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Cost of sales	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	107	88	99
Average selling price	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	110	106	105
Landed price of imports from China	Rs./Kg	No imports	No imports	33.45	33.28

51. It is noted that while the cost of sales increased by Rs.*** per Kg in the POI over the preceding year, the selling prices declined by Rs.*** per Kg. It is, thus, seen that whereas cost of sales increased, the selling price slightly declined. It is noted that the domestic industry has in fact reduced the prices in POI as against the claim of interested parties that the domestic industry resorted to frequent price increases.

Price Underselling

52. The Authority has assessed the extent of price underselling by comparing non injurious price of the domestic industry with the landed price of imports (for POI), as shown below:

Particulars	Unit	China PR
Non injurious price	Rs./KG	***
Landed price of imports	Rs./KG	33.59
Price under selling	Rs./KG	***
Price under selling as a % of landed price	%	***
Price under selling as a % of landed price	Range	55-65

53. It is seen that the landed price of imports is significantly below the the non-injurious price of the domestic industry. The dumped imports are, therefore, resulting in price underselling in the market.

G. ECONOMIC PARAMETERS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

54. Annexure II to the AD Rules requires that determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. An examination of performance of the domestic industry reveals that the domestic industry has suffered material injury. Various injury parameters relating to the domestic industry are discussed below.

a. Capacity, production, sales volumes, and capacity utilization:

55. Information on capacity, production, capacity utilization and sales volumes of the domestic industry has been stated in the table below.

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Capacity	MT	9,000	9,000	9,000	9,000
Production	MT	5,052	4,502	7,576	8,152
Capacity Utilization	%	56	50	84	91
Sales volume					
□ Domestic	MT	4,446	4,913	7,409	8,094

□ Captive	MT	60	49	61	-
□ Exports	MT	285	49	59	62
Total Sales	MT	4,791	5,011	7,530	8,156
Demand	MT	6,137	7,290	9,597	11,101

56. It is seen that the demand for the product in the country was earlier much lower than the available capacities. It is noted that production declined in 2008-09 and then increased thereafter. The domestic industry contended that it was not able to produce the goods to the extent it could have in view of lack of demand for the product in the Country. As the demand for the product increased, production and utilization of capacities increased over the injury period. The sales volumes of the domestic industry have increased throughout the injury period.

b. Market Share:

57. Information relating to market share is given in the following table. It is seen that the market share of the domestic industry declined in 2008-09, increased in 2009-10 and then declined in the POI. At the same time, imports from the subject country which were non-existent in 2007-08 and 2008-09, have increased from 4.09% in 2009-10 to 8.74% in POI. It is seen that the decline in market share of domestic industry in 2008-09 was due to the market share captured by other domestic producers and not on account of imports from subject countries. Further, the domestic industry regained its lost market share in 2009-10 and its share in demand in 2009-10 was in fact higher than previous years.

Market Share in Demand	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Sales of Domestic industry	%	73.43	68.07	77.85	72.92
Other Indian producers	%	25.77	31.69	18.06	18.05
Subject Imports	%	-	-	4.09	8.74
Imports from Other countries	%	0.80	0.24	-	0.29

c. Profit/Loss, Return on Investments, Cash Profit

58. Information relating to profitability of the domestic operations relating to the product under consideration, return on investment and cash profit is given in the following table.

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11
Profit before tax	Rs. Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	-100	615	6035	1988

Cash profit	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	166	613	281
Profit before interest	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	212	1102	527
Profit before interest & depreciation	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	140	425	242
Return on Investment (NFA) per unit	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	214	916	262

59. It is seen that the domestic industry was suffering financial losses in the base year. The domestic industry contended that this was due to lack of demand for the product in the country and consequently lower prices kept by the industry. The domestic industry could not produce to the extent it could have in the absence of sufficient demand, thus, leading to higher incidence of overhead costs. It was further stated that had the domestic industry produced to the optimum capacity it would have earned profits. The Authority notes that the domestic industry could not recover the fixed expenses on account of unutilized capacities, leading to losses in 2007-08. When the demand for the subject goods increased, the Domestic Industry posted profits in 2008-09 and 2009-10. However, the profits of the domestic industry declined significantly in the POI with significant increase in dumped imports from China.

60. The table below shows profitability per unit. It is noted that after incurring loss in 2008-09, the profitability of the domestic industry improved in 2008-09 and 2009-10 and then declined significantly in the POI.

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Cost of sales	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	107	88	99
Selling price	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	110	106	105
Profit/(Loss)	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	(100)	556	3621	1092
Cash profit	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	150	368	154

Profit before interest	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	192	661	289
Profit before interest, depreciation and tax	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	127	255	133
Return on Investment (NFA) per unit	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	214	916	262

61. It is seen that return on capital employed and cash profits improved till 2009-10 due to better selling price and, thereafter, deteriorated significantly in the POI with the significant increase in dumping of the subject goods from the subject country.

62. It has been stated by the responding importer/consumer that while the domestic industry has claimed deterioration in its profits, the other domestic producer is able to sell and earn profits. However, no evidence has been submitted to the Authority by the interested parties to substantiate their claim. The Authority notes that even the other domestic producer Balaji Amines has supported imposition of anti dumping duty.

d. Inventories:-

63. Information relating to inventory with the domestic industry is given in the following table. It is seen that the stock had declined till 2009-10 and then increased in the POI in spite of increase in sales volume.

Stock (Volume)	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
— Opening Stock	MT	***	***	***	***
— Closing Stock	MT	***	***	***	***
— Average Stock	MT	469	344	113	133

e. Employment and wages:

64. Information relating to employment of the domestic industry is given in the following table. It is seen that employment has increased over the injury period. Further, the wages paid have also increased in line with the company's overall performance for different products.

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11
Employment	No	18	20	22	24
Wages	Rs.Lacs	***	***	***	***

Trend	Indexed	100	91	96	117
-------	---------	-----	----	----	-----

f. Productivity

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11
Productivity per employee	MT	281	225	344	340
Trend	Indexed	100	80	123	121
Productivity per day	MT	14	13	22	23
Trend	Indexed	100	89	150	161

65. From the table above, it is seen that productivity per employee and productivity per day of the domestic industry has increased in the POI in comparison to the base year, except in 2008-09.

g. Dumping Margin:

66. Dumping margin from subject country is not only above de minimis but also significant.

h. Factors affecting domestic prices

67. Consideration of the import prices from subject country and other countries, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market show that the landed value of imported material from subject country is below the selling price of the domestic industry, causing price undercutting in the Indian market. There are low volume imports of the product under consideration from other countries. There is no viable substitute to this product. Demand for the product was showing significant jump and could not have been a factor responsible for price suppression faced by the domestic industry. One of the major factors responsible for the domestic industry prices is the import prices of the subject goods from subject country and the cost of production of the domestic industry. As the information shows, the domestic industry has been prevented from charging a price that would permit recovery of cost of production and earn reasonable profits.

i. Ability to raise capital

68. The domestic industry is a multi-product company. The domestic industry contended that should the dumping from the present sources persist, ability of the domestic industry to raise capital for the Product under consideration would suffer.

j. Growth

69. Growth in volume parameters such as production and sales shows a positive trend. Market share shows negative growth despite existing capacities in the country. Growth in price parameters such as profit, cash profit and return on capital employed was positive till 2009-10 and became negative in POI with significant dumping of the product in the country. Overall growth of the domestic industry was adverse.

k. Conclusions on injury

70. From the above, the Authority concludes as under:

- i. The imports of the product under consideration from the subject country have not only increased significantly in absolute terms but also in relation to production and consumption in India during 2009-10 and POI.
- ii. Imports from the subject country are undercutting the prices of domestic industry to a significant extent. The price undercutting is in spite of low prices already offered by the domestic industry.
- iii. While the cost of production of the domestic industry increased in the POI, the selling price slightly declined. The effect of the dumping was, therefore, to suppress the prices of the domestic industry and prevent price increases that would have occurred in the absence of dumping.
- iv. Even though the production, sales and capacity utilization of the domestic industry improved, the market share of the domestic industry declined.
- v. Performance of the domestic industry with regard to profits, return on investment and cash profits was improving till 2009-10 and declined significantly in POI despite improvement in production, capacity utilisation and domestic sales.
- vi. The inventories with the domestic industry were declining till 2009-10 and increased once again in POI.
- vii. Dumping margin is quite significant.

71. From the above, the Authority concludes that all the parameters, collectively and cumulatively, establish that the domestic industry has suffered material injury.

H. THREAT OF MATERIAL INJURY

72. In addition to material injury, domestic industry contended that the dumped imports of the product under consideration are threatening material injury to the domestic industry. No documentary evidence was provided by opposing interested parties to dispute the claims of the domestic industry. The Authority examined the claims made by the domestic industry and opposing interested parties and the following are relevant in this regard:

- i. It is seen that there is a significant increase in imports in recent period which have gone up from nil in 2007-08 and 2008-09 to 393 MT in 2009-10 and 971 in 2010-11 respectively.
- ii. The price difference between the imported and domestic products is quite significant. Imports are entering at prices that will have a significant

depressing or suppressing effect on domestic prices resulting in increased demand for the imported subject goods.

- iii. The evidence provided by the domestic industry in the form of a report prepared by an agency in China shows that capacities created by the Chinese producers are far higher than their domestic demand.
- iv. The information provided by the applicant, as shown below, shows that the export orientation of the Chinese producers/suppliers is quite high and has ranged between 51-100%. The information also shows existence of a large number of Chinese players in this product.

Chinese Producer	Export Orientation
Hebei Global Fodder Additive Co., Ltd.	61% - 70%
Changsha Yonta Industry Co., Ltd.	91% - 100%
Siping city choline chloride Co., Ltd	100%
Jj Choline Limited (Choline Chloride)	51-61%
CangzhouHuayou Import & Export Trade Co., Ltd.	91-100%
Qingdao YijiaHuayi Import and Export Co., Ltd	70%
Be-Long Choline Industrial Corp.	100%
CangzhouGoldlion Chemicals Co., Ltd	61% - 70%
Qinhuangdao Sinochem Imp. And Exp. Co., Ltd	81% - 90%
Hebei Kangdali Pharmaceutical Co., Ltd	40%
LiaochengRongheng Chemicals Ltd.	80%
Jinan Asia Pharmaceutical Co., Ltd	41-60%

73. The Authority, therefore, holds that various parameters relating to domestic industry collectively and cumulatively establish that the imports are threatening material injury to the domestic industry.

I. CAUSAL LINK

74. Applicant submitted the following:

- a) Listed other factors of injury have not caused injury to the domestic industry.
- b) Factors such as price undercutting and consequent loss of market share lost sales opportunity and consequent adverse impact on the production & capacity utilization, profits, return on investment and cash flow show that the domestic industry has suffered injury due to dumping of the product.

75. As per the AD Rules, the Authority, *inter alia*, is required to examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, so that the injury caused by these other factors may not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, *inter alia*, the volume and prices of imports not sold at dumped prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry. It was examined whether these other parameters listed under the AD Rules could have contributed to injury to the domestic industry. It was found that:-
- a. Volume and price of imports from third countries:- The Authority notes that there was very low volume of imports of the product under consideration from third countries in the POI. Thus, imports from third countries could not have caused injury to the domestic industry.
 - b. Contraction in Demand and Changes in pattern of consumption: It is noted that the demand of the subject goods has increased significantly in the period of investigation as compared to the base year. There is also no indication of any change in the consumption pattern.
 - c. Trade Restrictive Practices and Competition between the Foreign and Domestic producers: The import of the subject goods is not restricted in any manner and the same are freely importable in the country. The domestic producers compete with the landed prices of the subject goods. The price of the domestic industry is influenced substantially by the landed price of subject goods. Moreover, no evidence has been submitted by any interested party to suggest that the conditions of competition between the foreign and the domestic producers have undergone any change.
 - d. Development of Technology: None of the interested party has raised any issue with regard to developments in technology as being the cause of injury to the domestic industry. No information, in respect of any significant development in technology is on record that could be the principal cause of injury to the domestic industry.
 - e. Export Performance: The Authority notes that the export volume of the domestic industry has remained almost at the same level during the POI and preceding two years. Thus, possible decline in exports is not a factor which could have attributed injury to the domestic industry. Also information on export performance has been separately provided by the domestic industry. Export profitability has been segregated and only profitability pertaining to domestic operations has been considered.
76. The Authority notes that while listed known other factors do not show injury to the domestic industry, the following parameters show that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports:
- a. Imports of the product under consideration have increased significantly. Consequently, the market share of the subject country increased and that of the domestic industry declined between 2009-10 and POI.

- b. The imports from the subject country are significantly undercutting the prices of the domestic industry.
- c. Whereas the cost of production of the domestic industry increased in the POI as compared to the preceding year, the selling price slightly declined. Thus, the price undercutting faced by the domestic industry prevented the domestic industry from increasing its prices in response to the cost increases. The imports are thus suppressing the domestic prices.
- d. The deterioration in the domestic industry's profits and return on capital employed are apparently a result of the dumped imports.

77. In view of the above, the Authority concludes that the domestic industry has suffered injury and injury to the domestic industry has been caused by dumped imports from the subject country.

J. MAGNITUDE OF INJURY AND INJURY MARGIN

78. The Authority has determined non-injurious price for the domestic industry on the basis of principles laid down in the Rules. This non-injurious price of the domestic industry has been compared with the landed values of the subject imports from subject country to determine injury margin. The injury margins have, thus, been worked out as follows:

Table showing Injury Margin

Particular	Rs. Per Kg.	USD per Kg.
Non injurious price	***	***
Landed price of imports	33 28	0.72
Injury margin	***	***
Injury margin (%)	***	***
Injury margin (Range %)	55% - 65%	55% - 65%

79. The level of dumping margins and injury margins determined are considered significant.

Indian Industry's interest.

80. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to reestablish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured by using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages

gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

Post Disclosure Statement submissions by the Domestic Industry

81. Post Disclosure Statement submissions by the Domestic Industry are as under:

- a. The scope of product under consideration is all concentrations for animal feed applications.
- b. Producers who are buying Choline Chloride liquid and selling Choline Chloride dry powder cannot be considered as the domestic producer of the product under consideration.
- c. Parameters such as price undercutting and consequent loss of market-share, lost sales opportunity and consequent adverse impact on the production & capacity utilization, profits, return on investment and cash flow show that the domestic industry has suffered injury due to dumping of the product.
- d. Both dumping margin and injury margin in the POI are positive and significant.
- e. In addition to material injury, facts of the case clearly establish that the domestic industry is threatened with material injury by the dumped imports considering the fact that the capacities created by the Chinese producers are far higher than their domestic demand and their export orientation is quite high.
- f. Ad-valorem form of anti dumping duty may be recommended in the present case in view of existence of different forms of the product and different levels of concentrations in which the product is produced and sold.

Post Disclosure Statement submissions by other opposing Interested Parties

82. Post Disclosure Statement submissions by the other opposing Interested Parties are as under:

- a) Disclosure statement provided to them in the late evening of 24th of September, 2012, whereas the date mentioned on DS was 21st September, 2012.
- b) The arguments raised by the company has not been given due weightage. Though the company raised various issues pertaining to the various aspects of investigation the same finds no mention in the disclosure statement.
- c) Support of Balaji Amines to the petitioner is a trade-off for seeking petitioner's support in another anti-dumping case relating to one of the products both companies are producers. Also, Balaji Amines is earning good profits.
- d) Most of the information sought by the company time and again was also not available on the public file as the case was shifted from one officer to another because of which the public file was not properly maintained.

- e) After 2010-11, the rupee has devalued significantly thereby making USD much dearer. It is therefore requested that the duty may be specified in Rupee terms rather than in USD terms.
- f) The petitioner having restricted the scope of PUC is now pressing to include those grades and applications of Choline Chloride which are specifically excluded by it in the petition and by the Designated Authority in its scope of investigation. It is submitted that no information in this respect has been provided to the company either by the authority or the petitioner.
- g) The entries referred to as transshipment clearly states the country of origin of goods and hence to say the same was transshipped to avoid some duty or fudge the import figures is liable to be rejected.
- h) No information filed by any interested party including petitioner or information subsequent to initiation received by the authority other than copy of petition (NCV) and written submissions filed by the petitioner were provided to answering company.
- i) The information with respect to the production of subject goods is also at variance from the information filed by the petitioner in its petition.
- j) CNV methodology adopted by the Authority is legally untenable. Accordingly, authority is requested to undertake an exercise to determine the normal value of China after selecting a proper analogous country keeping in view the production capacities, market size, technological differences and consumer preferences which in this case has not been done so far by the authority.
- k) With respect to export price, it is observed that the observations made by the authority are not only confusing but also self-contradictory. There is a contradiction in Para 23 and 33.
- l) Domestic Industry contented that Suguna has imported and traded the material in the local markets causing injury to the local industry is misleading and damaging on the reputation of Suguna. Suguna in fact didn't import any quantity of subject goods during the period of investigation, i.e., the period where petitioner has claimed to have been materially injured.
- m) Wide price variation between Balaji and the Domestic Industry, while both source the raw materials from the local suppliers.
- n) Authority has failed to observe that the consumption and demand of subject goods has also increased significantly from earlier level of 1000 MT to over 11,000 MT during POI.
- o) No volume injury to Domestic Industry.
- p) The undercutting of imports has no relation with the alleged injury to DI.
- q) Incorrect calculation of demand, as captive consumption and exports of petitioner have been considered.
- r) Main reason for the decline in the market share of the petitioner is due to the fact that the quality aspects (TMA content in the Choline Chloride is not within its permissible range) of the domestic product have deteriorated, and hence, consumers have to depend upon the imported product.
- s) The authority has not provided the information it has received from the DGCI&S and the methodology adopted by it to identify the subject goods.
- t) Share of imports in market share is of no relevance in a market where demand is increasing rapidly and therefore no volume injury.

- u) Figures on landed prices of imports have changed without supplying interested parties any information or data warranting such change in the import prices. Despite of the alleged severe undercutting, petitioner has not tried to match its prices with that of imported goods. The non-reduction of prices has not impacted the sales of the petitioner or other Indian Manufacturers of subject goods.
- v) The petitioner has been earlier aiming for super profits in view of absence of any competition and was abusing its dominant position by charging arbitrary prices.
- w) During the base year and in the year 2008-09 there were no imports of subject goods from any country. Therefore financial position of the petitioner is compared with the base year or year 2008-09, and it could be conclusively held that the financial position of the petitioner has improved significantly and the petitioner has suffered no injury on account of importation of alleged dumped goods.
- x) 22% ROI in each and every case is not tenable.
- y) The petitioner has itself stated that it was having an effective capacity of only 3000 MT during the base year. Therefore the observations made by the authority are irrelevant and devoid of merits.
- z) It is submitted that the price of subject goods were lower, i.e., Rs.29/KG in the year 2009-10 while the same increased in the POI to Rs.34/KG. When petitioner's prices could remain un-challenged at lower level in year 2009-10 and it could post great profits, it is beyond comprehension as to how it could be affected despite increase in landed value of the subject goods in the POI.
- aa) The balance sheets of Balaji Amines may be verified for the years 2008 to 2011 wherein it has been clearly shown that their profits are getting increased year on year and their sales are also improving.
- bb) Suguna refutes the observation of the Authority that the domestic industry has been prevented from charging price that would permit recovery of the production cost and earn reasonable profits.
- cc) Threat of injury as projected by the petitioner is mere hyping the numbers of unverified reports and that of the year 2008-09, which has no relevance with respect to POI as well as the current year or future.
- dd) Definition of other facts is an inclusive definition which cannot be rendered as exhaustive one as appeared to have been projected in the disclosure statement.

Examination by the Authority

83. Submissions made by all the interested parties have been examined by the Authority. The Authority notes that majority of the submissions are repetitive and they have already been dealt with under appropriate headings in these findings. The Authority has examined the submissions hereunder to the extent found relevant to the present investigation:

- a. As regards the contention of the domestic industry that no preliminary findings were notified, the Authority notes that issuance of preliminary findings is not mandatory in all cases.

- b. Based on the request of the interested party, the Authority has provided additional time to offer their comments.
- c. It is incorrect that the arguments raised by Suguna have not been given due weightage and all issues to the extent considered relevant to the investigation have been adequately and appropriately addressed in the disclosure statement.
- d. With regard to the contention that Balaji Amines support is a trade-off for seeking petitioner's support in another anti-dumping case, the Authority notes that the issue is irrelevant to the Authority. The fact of support or opposition to the petition alone is relevant. In any case, the petitioner has requisite standing even without support from Balaji Amine. It is also noted that no product has been specified by Suguna wherein the present petitioner and Balaji Amines are producers and anti dumping duty has been levied.
- e. It is without any basis that information sought by the company was not available in the public file or change in the handling officer made any difference in this regard. It is also without any basis that the public file was not properly maintained.
- f. As regards devaluation in INR, the Authority is required to consider the parameters prevailing during the investigation period. It is also noted that the domestic industry stated that the input prices also increased after the investigation period.
- g. With regard to arguments concerning scope of the product under consideration, it is clarified that the scope of the product under consideration has not been enlarged.
- h. As regards the contentions of the interested parties on transshipment, it is clarified that the Authority has adopted DGCI&S statistics and there is no transshipment considered by the Authority.
- i. With regard to difference in the injury figures contained in the petition and figures adopted by the Authority, the figures contained in the disclosure statement and the present findings are on the basis of investigation and verification conducted by the Authority.
- j. One of the interested parties has disputed the methodology adopted for determination of normal value. It has been claimed that the authority cannot treat India as a surrogate country. The Authority notes that petitioner had not provided an evidence of price or constructed value in a market economy third country, pleading lack of relevant information. It is noted that prices from market economy third country to India could also not be adopted for the reasons that there are insignificant imports of the product under consideration from third countries. None of the Chinese producers responded to the Authority. Nor any interested party has made a claim for market economy treatment. While disputing the claim of the domestic industry with regard to determination of normal value, the interested party has neither made any claim nor advanced any evidence either with regard to price or constructed value in a market economy third country. Under the circumstances, the Authority has proceeded with the only available option, i.e., to determine normal value on "any other reasonable basis".
- k. As regards contention that para 23 and 33 of disclosure statement have apparent contradiction, the same has been reviewed and no contradiction therein has been

found. Para 23 of the disclosure statement concerns views of interested parties, whereas para 33 deals with the proposed determination of the Authority.

- l. As regards imports and sale of the product by Suguna, while the issue is irrelevant to the present determination, it is noted that the domestic industry has provided evidence showing that Suguna has offered the product for sale.
- m. As regards price variation between the two domestic producers, the Authority notes that some price difference in the prices of different suppliers is a natural phenomenon of competition, unless the two parties are acting in collusion and resorting to anti competitive practices. The interested party has however not provided any evidence demonstrating that the claimed injury to the domestic industry is on this account.
- n. As regards arguments on increased demand and no adverse volume effect, it is noted that the market share of the domestic industry and other domestic producer declined whereas that of the Chinese imports increased significantly in the POI as compared to preceding year (there were no imports before that). Inventories with the domestic industry in the POI increased. It is also noted that the performance of the domestic industry clearly shows adverse price effect as a result of dumped imports. It is clarified that the demand calculations does not include exports made by the domestic industry. However, captive consumption of the product has been included. While the captive consumption of the domestic industry is not so significant as to make any material difference whether the same is included or excluded, it is noted that it would not be appropriate to exclude captive consumption of the domestic industry. As regards the contention that the market share declined due to the quality issues, it is noted that Suguna has on one hand claimed that it has not imported the product upto POI and at the same time has argued that it has quality issues with regard to the product supplied by the domestic industry (and therefore had to import the product). It is also noted that the claims of quality made by Suguna are unsubstantiated.
- o. As regards disclosure of DGCI&S transaction wise information, the same is not public domain information and cannot be placed in public file. However, the Authority has adequately disclosed all relevant information derived from the DGCI&S data in the disclosure statement and present findings. It is also clarified that the domestic industry had adopted IBIS import data, whereas the Authority has adopted DGCI&S data and therefore the landed price of imports varies to such an extent
- p. As regards contention that the domestic industry was earning super profits; was abusing its dominant position and wanted to maintain the same through anti dumping duty, it is noted that the facts of the case have not established that the domestic industry was earlier earning super profits.
- q. As regards contention on return on capital employed, the Authority has allowed return on investment as per its consistent practice.
- r. As regards contentions on effective capacity in base year, it is clarified that the domestic industry has not said that it had capacity of only 3000 MT. The contention of the domestic industry is that it did not use the available capacities due to lack of demand for the product in the Country.

- s. As regards comments on para-60 of the disclosure statement, it is clarified that the information contained therein is based on verified figures.
- t. As regards profits of Balaji Amine, it is noted that no evidence has been provided to the Authority that Balaji Amine is earning significantly higher profits as compared to domestic industry. It is noted that Balaji Amine is a multi product company and therefore its profits in the annual report are not representative of the operations relating to the product under consideration.
- u. As regards comments on threat of injury, it is noted that other interested parties have not provided any evidence that could prove that the claims made by the domestic industry are not correct.

Conclusion

53. After examining the issues raised and the submissions made by the interested parties and facts made available before the Authority, the Authority concludes that:

- a. The subject goods have entered the Indian market from the subject country below associated normal values, thus, resulting in dumping of the subject goods;
- b. The dumping margin of the subject goods imported from the subject country is above de-minimis;
- c. The domestic industry has suffered injury in respect of the subject goods; and
- d. The injury to the domestic industry has been caused due to dumped imports of the subject goods from the subject country.

Recommendation

54. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the domestic industry, exporters, importers and other interested parties to provide positive information, *inter alia*, on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted an investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the anti-dumping rules and having established positive dumping margins as well as injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of anti dumping duty is required to offset dumping causing injury to the domestic industry. Therefore, the Authority considers it necessary and recommends imposition of anti-dumping duty on imports of the subject goods from China in the form and manner described hereunder.

55. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. It is noted that there is a significant differentiation of the product under consideration in terms of its form and concentration. Accordingly, the Authority recommends imposition of anti-dumping measure as an ad valorem duty on the subject goods, the description of which is specified in column (3) of the Table below, originating in the country specified in the corresponding entry in column

(4) and exported from the country specified in the corresponding entry in column (5), and produced by the producer specified in the corresponding entry in column (6) and exported by the exporter specified in the corresponding entry in column (7), and imported into India, at the rate to be worked out as a percentage of the CIF value of imports of the subject goods as specified in the corresponding entry in column (8) of the said Table.

Duty Table

S No.	Sub-heading	Description of goods	Country of origin	Country of exports	Producer	Exporter	Rate of Duty on CIF Value
1	2	3	4	5	6	7	8
1	2923 or 2309	Choline Chloride of all forms and concentrations for animal feed applications	China PR	China PR	Any	Any	60.79%
2	Do	- Do -	China PR	Any country other than China PR	Any	Any	60.79%
3	Do	- Do -	Any country other than China PR	China PR	Any	Any	60.79%

Note:

1. It is clarified that only the imports of the product under consideration as elaborated in the paragraphs relating to product under consideration in the present findings and as specified in column 3 above shall attract anti dumping duty.
2. For the purposes of this Notification, "CIF value" means the assessable value as determined under Section 14 of the Customs Act, 1962 (52 of 1962).

87. An appeal against the order of the Central Government shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

VIJAYLAXMI JOSHI, Designated Authority